

१०१५२०

प्रगल्भकर्ता
श्री जैनधर्म प्रसारक
सच्चा.
जावनगर.

डॉ. कविताशिक्षा अपरनाम गणपतिपिकासमीर.

किंमत आठ आना
संवत् १९४८
अमदावाद युनियन
प्रीन्टींग प्रेस

१०१५२०

१०५५८०५

प्रगल्भकर्ता
श्री जैनधर्म प्रसारक
सच्चा.
जावनगर.

उदकहितशिक्षा अपरनाम गापदिपिकासमीर.

किंमत आठ आना
संवत् १९४८
अमदावाद युनियन
प्रीन्टींग प्रेस

१०५५८०५

हुंठक हिताशिक्षा.

अपरनाम

गण्य दीपिका समीर.

(हुंठकमणि आर्या पार्वतीकी वनावेली ज्ञान दीपिका—वास्तविक गण्य दीपिकाका खंभन)

विदित हो के हम हुंमावसर्पिण कालमें बहुत बातें आश्चर्यकारी हो गई हैं, और होती चली जाती हैं. तिनमेंसे एक यहूती बात मुझजनों के हृदयमें आश्चर्यजनक है कि स्त्रियांजी पुरुषोंकी सजामें बैठके व्याख्यान करती हैं. और प्रश्नोत्तर रूप खंभन खंभनकी पुस्तकेंजी रचती हैं. जैसे पार्वतीनामा हुंठकणीने ज्ञान दीपिकानामें पुस्तक रचा है. आश्चर्य तो यह है कि जैनशासनमें हजारों साधवीयां हो गई हैं परंकिमी साधवीका रचा हुआ कोई पुस्तक वांचने और सुननेमें नहीं आया है. तथा श्री महावीरस्वामीकी उत्तीम हजार साधवीयांथी, उनमेंसे अनेक साधवीयांने अनेक प्रकारके तप करे हैं तथा एकादशांग शास्त्र पढ़े हैं परं किमी साधवीने पुस्तक नहीं रचा है; और न पुरुषोंकी सजामें बैठके धर्मोपदेश करा है. क्योंकि श्री नंदीजीसूत्रमें ऐसा पाठ है कि जिस तीर्थकरके शासनमें जिनने गिण्य चार प्रकारकी बुद्धि करके साहित होवे तिस तीर्थकरके शासनमें तितने हजार वा लाख प्रकीर्णक शास्त्र होने हैं. परं साधवीयोंके रचे शास्त्र किसी शास्त्र-

येंजी नहीं कथन करे है. जैनमतके विना अन्य मतोंमें हमने नहीं सुना हैकि स्त्रीका रचा अमुक शास्त्र है, वा अमुक स्त्रीने पुरुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करा, वा स्त्रीकों पुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करनेकी आज्ञा है. अब पाठजनो ! विचार करना चाहियेकि पार्वती दुंदकणीने पुस्तक रचा है सो जैनमतके शास्त्रकी आज्ञासे रचा है तबतो शास्त्रका पाठ दिखलाना चाहिये; जेकर शास्त्रव्य आज्ञामें विनाही रचा है तब तो शास्त्राज्ञाके जंग करने प्रायश्चित लेना चाहिये. जेकर पार्वती दुंदकणीने ऐमा विचार करा होवेगाकि 'जगवंतकी आज्ञा जंग करणरूप उपा मेरेकों लगा तो क्या हुआ मेरी पंमिताइ तो दुंदक लोक में प्रगट हो गई' परंतु ऐसा विचार बुद्धिमानोकातो नहीं है.

पूर्वपक्ष-क्या अमरसिंह दुंदकके समुदायमें कोइ पुस्तक रचने योग्य दुंदक साधु नहीं था जिस्से पार्वती दुंदकणीकों ज्ञान दीपिका पुस्तक रचना पमा?

उत्तर-यह तो माननाही पमेगाकि अमरसिंहका कंइजी चेला पुस्तक रचने सामर्थ्य नहींथा तबहीतो स्त्री उर्थान पार्वती दुंदकणीकों पुस्तक रचना पमा.

प्रश्न-पार्वतीने जो पुस्तक रचा हैसो अज्ञा काम क है वा नहीं?

उत्तर-जैनशास्त्रानुसार तो यह काम अज्ञा नहीं करा है प्रश्न-दुंदक साधु श्रावकोंने पार्वतीकों पुस्तक रचने मना क्यों नहीं करा क्या उन लोकोंका यह मथर नहीं थी के शास्त्रमें किमी स्त्रीका रचा पुस्तक नहीं चला है.

उत्तर वे विचार तो शास्त्र अर्थीतरसों पढे मुनेही नद देतां फेर वे मना करनेमे सामर्थ्य कैमें होंवे. जेकर वे प

दृष्ट है तां वेही वतला देवे के अमुक जैनमतके शास्त्रमें स्त्रीकों पुस्तक रचना और पुरुषोंकी सज्जामें व्याख्यान करना चला है.

मश्व-दुंडक साधु श्रावकतां बहून आनंदित हुएहैं के हमारी पार्वतीने कैसी अच्छी ज्ञान दीपिका रची है.

उत्तर-ये सब जैनशास्त्रोंके अनभिज्ञ हैं. इस वास्ते परस्पर श्लाघा करते हैं. किसी कविने यह श्लोकजी कहाहैं.

उप्राणां विवाहेतु गर्दना वेद पाठकाः ।
परस्परं प्रशंसन्ति अहो रूप महोध्वनिः॥

मश्व-ज्ञान दीपिकाके उपर यह लिखा हुआ है कि "बाल ब्रह्मचारी श्रीमती पार्वती" सो यह लेख ठीक है वा नहीं ?

उत्तर-हे जन्य ! हमको किसीके गुणोंमें इर्ष्या नहीं है कि हम जीवमें यह गुण क्यों हुआ. परंतु मन्यगुण होगा तब हम उनके गुणोंको धन्यवाद कहेंगे. क्योंकि ये पार्वती प्रथम जिन दुंडक दुंडकणीकी शिष्याणीथी तिनमें जैमासाधुपणा अथवा ब्रह्मचर्य वा बाल ब्रह्मचर्यथा नानो आगरके बहुत लोक जानतेहैं क्योंकि जैन तत्त्वादर्शके रचने वाले हमारे गुरुमहाराजनेजी संवत् १७२० की शालका चतुर्मास आगरमेंही करा था. इन वास्ते पार्वतीके गुरु वा गुरुणीके स्वरूपको अच्छीतरसे जानते हैं. उनमें रहके तथा उनको गोमके कितनेक दिनोंतक एकजी रहके हमने बाल ब्रह्मचर्य पाला होवेगा ना हम इसके बाल ब्रह्मचर्यकोजी धन्यवाद देने हैं. क्योंकि अपने अपने गुण अथगुण सबको मान्य होते हैं. किसीके कहने वा लिपनेसे किसीके

गुण अवगुण जाते आते नहीं है. हगनां सर्व ब्रह्मचारी
वाल ब्रह्मचारीयोंके गुणाके यशवाद बोलने वाले हैं. परं
स्त्रीकों “वाल ब्रह्मचारी” ऐसा लेख जिसने लिखा व
लिखवाया उपवाया होगा वोतो बमाही मूर्ख होवेगा
क्योंकि स्त्रीको पुरुष लिखना अयुक्त है. ‘वाल ब्रह्मचारी’
तो पुरुषकों लिखा जाता है. स्त्रीकों तो ‘वाल ब्रह्मचारिणी’
ऐसा लिखना सम्मत है, इम वास्ते “आंधे चूहे थोथे
धान, जैसे गुरु तैसे यजमान;” यह कहना ठीक हो गया.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीको तो हुंढक लोक बनी पंमि-
तानि मानते है तो फेर पार्वती हुंढकणीने ‘ब्रह्मचारी’ श-
ब्दकों सुधारा क्यों नहीं होवेगा ?

उत्तर-जेकर पार्वतीमे इतनी बुद्धि होती तो सुधारा
करती परंतु पार्वतीकी रची पुस्तकके सुधारने वाले पंमि-
ब्राह्मणकी बुद्धिनी निर्मल नहींथी नहीं तो थोमेसे लो-
जके वास्ते स्त्रीकी रची महा अशुद्ध पुस्तकके सुधारनेसे
अपनी बुद्धिको कलंकित न करता.

प्रश्न-पार्वती हुंढकणीने जो ज्ञानदीपिका रची है ति-
समे कितनीक वार्ते जैनतत्वादर्श ग्रंथकी लेके दाखल करी
है ऐसा मालुम होता है तो फेर पार्वतीने जैनतत्वादर्शका
और तिसके कर्त्ताका अपमान किस वास्ते करा है ?

उत्तर-उक्त ग्रंथके कर्त्ताने तो सज्जानोंके उपकार :
स्ते ग्रंथ रचा है परंतु कृतघ्नीजन तो उपकार नहीं मा-
है. यह उनकी प्रकृतिका सजावही है. जैसे वृषित माहि
मरोवरमेंसे निर्मल पानी पीके उस सरोवरमे मूते बि-
नहीं रहती है. तैसेही छर्जनोका सजाव है. इस बात
किमी पंमिने श्लोकनी लिखा है.

विना पराप वादेन नतृप्यते उर्जनो जनः।
काकःसर्वरसान्भुंक्त्वा विना मेध्यं नतृप्यति।

यह पार्वती शब्दज्ञान अर्थात् संस्कृत माकृत के व्यकरणके बोधमें रहित है तो फेर इस विचारीको शास्त्रबोध कैसे होवे? और विना बोधके लोकोंके धाम जो मन आवे तो स्वकपोल कल्पित कहती फिरती है और अगमग, लेकिनादि शब्द लिखके एक पोथी बनाइ है. जिसका नाम "ज्ञान-दीपिका-जैनोद्योत" रख्या है. क्योंकि इस ज्ञान दीपिका रचनेमें पहिले दुंदक लोक यके अंगकारमें फिरने होंगे. इस जैनोद्योतमें उन विचारोंको दर्शाने लगा है इस हेतुमें पार्वती दुंदक लोकोंको तो परीक्षणी है परंतु इनने जो जिनाज्ञाका जंगम्य पुस्तक रचाइस्य पापमें इस विचारीको क्या आपत्तियें होवेगी और इसको उद्योत कान करेगा यह तो हम नहीं जानते है.

प्रथम-पार्वतीने तो अपनी रची ज्ञान दीपिकामें संस्कृत माकृत श्लोक और 'तद्गमात् कारणात्' 'इत्यर्थ' 'इति हेम' 'अगमात् कारणात्' 'पूर्वक' इत्यादिक अनेक संस्कृत शब्द लिखे है तो फेर पार्वती संस्कृतनादिककी जानकारी क्यों नहीं

उत्तर जैसे किमी ब्राह्मणने अपना जूना गठवानाथ इस वास्ते धर्मकारीको कहता है "हे चर्मणि चर्मन कुप्रगतः" तब चर्मकारी कहती है "बाहिलो उरिमे नमगत" जैसी यह संस्कृत है ऐसीही पार्वती दुंदकणीकी लिखी हुई संस्कृत है. अब ए विचारी कदाचित् मारसान व्याकरणमात्रनी लखीनरेके पद जावेगी तब अपनी रची ज्ञान दीपिका यांनके मनमें पश्चात्ताप करेगी के मे मूर्खणीने अ-

दोन्धर लोके देसे लक्ष्मण नीर भ्रष्ट शब्द खानी मूर्खता
दसे लिख दानेगे. तेकर संस्कृत नली पढेगी तोनी दाने
दोन्धर लक्ष्मण जय लिखेते ते सर्व विद्वज्जन देसेगे तस
दुःखदायक नकर करेते

दोन्धर लोके देसे लक्ष्मण नीर भ्रष्ट शब्द खानी मूर्खता
दसे लिख दानेगे. तेकर संस्कृत नली पढेगी तोनी दाने
दोन्धर लक्ष्मण जय लिखेते ते सर्व विद्वज्जन देसेगे तस
दुःखदायक नकर करेते

दोन्धर लोके देसे लक्ष्मण नीर भ्रष्ट शब्द खानी मूर्खता
दसे लिख दानेगे. तेकर संस्कृत नली पढेगी तोनी दाने
दोन्धर लक्ष्मण जय लिखेते ते सर्व विद्वज्जन देसेगे तस
दुःखदायक नकर करेते

प्रवाल कवरमेन नामका बनियाथा. उसने मनोहरदासके
 टोलेके रत्नचंद्रजीके पास दीक्षा लीनीथी परंतु कवरमेन
 रत्नचंद्रकी आज्ञा प्रमाण नहीं चलताथा. इम वास्ते र-
 तनचंद्रजीने उमकों अपनी समुदायसे अलग कर रखाथा.
 कवरमेन बहुत करके आगरेमें रहनाथा. बालुगंजमें उमकी
 किननीक उकानेजीथी. और कवरमेन मालदारजीथा.
 तिमने मिहौरा गाममें बुले जावमेकी बेटी विधवा हीरां-
 को जिसतरमें तहांसे ले गयाथा सो वृत्तांत सिहारेके लोक
 मर्ब जानते है. आगरेमें दुंढकणीके वेपमें हीरां रहेतीथी
 कवरमेन और हीरांका जेसा आचार व्यवहारथा सो मर्ब
 आगरेके श्रावक जानते है. संवत् १९२० में श्री आत्माराम-
 जीने दुंढकपनेमें शाय्य पहने वास्ते श्री रत्नचंद्रजीके पास
 चौमासा आगरेमें कराथा तिम अजमेरमें हीरां पंजाबी साधु
 जानकर कदे एकवार श्री आत्मारामजीके पास वेदना क-
 रनेकों आया करतीथी. तिम अजमेरमें रत्नचंद्रकी आ-
 य्यके पास बिना दीक्षा लीयां मोहनी १ सुंदरी २ जी-
 यो ३ डुरगी ४ बगरे छोटी उमरकी ठोकरीयांथी परंतु
 हीरांके पास पार्वती बिना दीक्षा लीयां उम बचनथी वा
 नहींथी यह निश्चय आत्मारामजीका नहीं है. परंतु जब य-
 मुनापार दोघट्ट गाममें संवत् १९२४ में श्री आत्मारामजी-
 का चेला नानकचंद्र और धनीगमका चेला गोर्धन और
 चतुरभुजजीका चेला जरताने पागमर बटिमें दीक्षा ली-
 नीथी तिम अजमेरमें हीरांके साथ यह पार्वती लगजग
 १४ वा १५ वर्गकी उमरमें गहने पहने हुए देखीगी. धां-
 केही दिन पीछे आलम गाममें चतुरभुजने जब अन्य ठोक-
 रीयांको दीक्षा दीनीथी तिनके साथही यह पार्वतीजी गुं-

कित हृष्टी. पीठे हीरां पार्वतीको साथ लेके सिद्धारे गा-
 ममें अपना मुख उजला करने वास्ते गृष्टी. पीठे हीरां
 और पार्वती आगरेमें गृष्टी. तीहां कवरसेन और कवर-
 सेनके चेले स्याममुखके साथ इसकी क्या जाने किस वा-
 तके वास्ते खटपट हूइ. यह तो इस पार्वतीकोही मालुम हो
 वेगी. तहांसे एकली रुसके ये निकलके कहां कहां रही
 और क्या क्या समाचारी साथी सोजी पार्वतीकोही मालुम
 है. पीठे लुहारे गाममें आइ तहां लुहारेके बनियोनें इसकी
 कितनीक वस्तुज ले लीनी. तद पीठे पार्वती अमरसिंहके
 टोलेमें आइ. संवत १९३० में जब श्री आत्मारामजीने स-
 हर अंजालेमें चतुर्मास कराथा तब कवरसेनने श्री आत्मा
 रामजीको एक चिठी लिखीथी तिसमें ऐसा लिखाथा
 "अमरसिंहने मेरी चेली पार्वती ले लीनी है जेकर तुम मे
 शाहता करो क्योंकि तुम मेरे गुरूके पास पढेहो. इस वा-
 जब पादमीको ठीकनेनी होती है तब गूरुके मनमुल देर
 गा है. उम नामे तुमारे साथी श्रावक पंजाबमें नहोतमें
 जेकर तें पादक मुजहों महायता करे तो मैं पंजाबमें अ-
 दर महागामी कनेगीमें तथा अन्य महागमें अमरसिंह
 फीला करे. अपनी चेली ले लंगा" तब आत्मारामजी
 विचारके अकार में कवरसेनको महाय देचंगा तो तों पं-
 जाब में पादक बहुत अज धर्मही निंदा कगोला. इस वास्ते
 अमरसिंह विधीता असाव नहीं लिखाथा अब कवरसेन
 तब असावसुखतां मा गये है और हीरां विचारी पार्वती
 अनेक वस्ते प्राणवें गंग गरी है. क्योंकि अमरसिंह अमरके
 अनेक वस्ते प्राणवें गंग गरी है. अमरसिंहके अनेक प्रा-
 णवें गंग गरी अनेक वस्ते प्राणवें गंग गरी है.

हराकि लुहारें गाममें हीरे हुंढीये श्रावककी पांतीकों ठाने निकलनाके पंजाबमें जेज दीनी, तिसके घरके यद्यपि ठोहराकीं पीठे ले गये, तोजी तिमके गामरे मुकलावा नहीं लेनेथे, और लुहारें गामके बनियोन हुंढकपंथ ठोरुके दिगंबर मंदिरमें पूजा करने लग गयेहैं, और पार्वतीकोतो पंजाबके हुंढकोने पंमितानीके चक्रपर चढा दइहैं, अथ इमकी रची पोथीमें इमकां जापा शुद्ध भोजनी नहीं आतीहैं इमवासने जापा शुद्धाशुद्धके समझने वालेने इसकी ज्ञानदीपिका देख लेनी, इधर शुद्धाशुद्धका विस्तार लिपिके फागद प्रयास करनेकी जरूर नहींहैं.

अथ पार्वतीकी पोथीका उत्तर लिखतेहैं.

प्रथम ज्ञानदीपिका पोथीकी प्रस्तावनाके पृष्ठ ७ उत्तर पार्वती लिखतीहैं "दीपकमें अनेक जीव दग्ध होकर साणंत होजातेहैं, इम लिये दीपक समझानतुल्य होजातेहैं."

उत्तर-इम लेखनं तो चारोवणोंके घर समझानतुल्य होगये, और गवे हलवाइयादिकी चठीयांजी समझानतुल्य होगइयो, क्योंकि सबके घरमें दीपक, चुन्डे, तंडुल इयके होने जादिमें अनेक जीव पकके घर जातेहैं, और ठाकुरघारे शिवालंगआदि समझानतुल्य होगये, और तेरे हुंढक श्रावकोंके घरजी समझानतुल्य होगये, और उनके घरमें नुं जिज्ञा लातीहैं तो तेरी जिज्ञाजी समझानतुल्य घरोंकी मिलत हो गइ, तिन जिज्ञाके खानेमें तेरी देह बुद्धिजी समझानतुल्य होगइ, जस वास्ते तेरा लेख समझानतुल्य होइ, इम जिज्ञाकी मुहबेतीको यथार्थ लिखना कहाने जाये नया कि एता मुहबेती तेजी है.

पृष्ठ ४ उत्तर पार्वतीने खजनी हुंढककी दीक्षाका सं-

वत ३७३० का लिखा है सो जुग लिखा है. क्योंकि अ-
मरसिंह हुंढकके वमेरे अमोलकचंद्र हुंढकने अपने हाथकी
लिखी हुंढक पट्टावलिमें लवजीकी दीक्षाका संवत ३७०९
का लिखा है. सो पट्टावली हमारे गुरुके पास है.

पार्वतीने लवजीके गुरु यतिका हाल लिखा है सो जी
जुग लिखा है. क्योंकि लवजी हुंढकका जो गुरुथा सो
लौकेका यतिथा. जिनोने प्रतिमाकी उठापना करी, और
इकतीससूत्र सचे मानेथे सोइथा. और जैनतत्त्वादर्शमें जो
लवजीकी वजरंगजीके साथ जो आचारकी वावत चरचा
लिखी है तिसमें वजरंगजीको शिथिलाचारी लिखा है सो
जी हुंढकोंकी कल्पित समाचारीके लेखानुसार लिखा है.

पांचमी पृष्ठसें लेके दशमी पृष्ठकी चौथी पंक्ति तक जो
लेख पार्वती हुंढकणीने लिखा है सो सर्व मनकल्पित, जुग
और वेपगर्जित लिखा है. और व्यवहारसूत्रकी चूलिका
के अनुसार जो जो वातां लीखी है वे सब उसकी समजमें
वीपरीत आइ है. क्योंकि व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक
प्रमाण लिखा है सो तो हमारे मस्तकपर है. परंतु उस
का जाकार्य इस हुंढकणीने यथार्थ नहीं लिखा है. उस
बीच श्री ऋचाहुस्वामि लिखते है कि चैत्य छव्यके हरे
वाले मुनि होंगे अर्थात् जिन प्रतिमाके छव्यके चोरनेवाले
माधु होंगे तथा लोचन करके माला रोपण, जिन जन्म म
होन्मव, उजमणादिक तथा जिनविंय प्रतिष्ठायोकी जं
विधि है उन विधिकों त्याग करके अविधि पंथमे परमे
इत्यादि पाठ है. सो उपर मुजिय काम करनेवालेकों तं
दपनी निंदनेही है. परंतु पार्वतीका तो मुग्ध मीठा नह
नेवाहै. क्योंकि हम पाठमें तो जिनप्रतिमाके छव्य हरे

वालेकी और माला रोपणादि जिनविध प्रतिष्ठा पर्यंत जि-
तने काम हैं सो सर्वही काम जो यथार्थ विधिसहित करना
न्याय करके अविधिमें करेंगे इनकी वानां हैं इमी पाठमें
तो मजबुत सिद्ध होता हैकि पुरोक्त काम अविधिमें नहीं
करने किंतु विधिसहित करने चाहिये. क्योंकि जब पाठमें
ऐसा लिखाकि विधिमें अविधिमें पढ़ेंगे तब प्रथम विधिमें
होंगे तो अविधिमें पढ़ेंगे, इस पाठमें विधि सिद्ध हो गई.
जब जज्ञवाहुस्वामीने विधिसहित पुरोक्त काम करने कथन
करे तो फेर उन कामोंका कौन निर्धर्मो प्राणी बिना निषे-
ध कर सकते हैं. अपरंच इन हुंदीये समान प्रतिज्ञा भ्रष्ट
थोमेही प्राणी होंगे क्योंकि जज्ञवाहुस्वामीके कथन कर
व्यवहारमूत्रकी चूलिकामें चंडगुप्त राजाके स्वप्नके अर्थ
तो ब्रह्मण करते हैं और उनही श्री जज्ञवाहुस्वामीकी करी
हुई नियुक्तियां नहीं मानते हैं इमी वास्ते एही चूलिकामें
चोथे स्वप्नमें जो मूत्रका चोर, अर्थज्ञा चोर विंगरे लिखा
है सो हुंदकोके वास्तेही है वो पाठ इस प्रकारका है.

चतुर्थे स्वप्नमें भूत नाचना | तेण कर्त्तुं कुमति मन
देव्या तह फलम

चतुर्थे चूयाणञ्चंति तेणकुमनजणा ॥

परंपरा आगमथी चादिर पठजे | सञ्चंदे आचार आचरीने
पुरोनाथीनी परंपराथी चादिर. | परंतु पुरोचार्यीनी गीने नहीं

परंपरागमेणं बहीया सञ्चंदाचार चारीया ॥

स्वयमेव संजय क्षेत्रे. परंतु | आकाशथी फलजानीपरं. जेस
सुखमिषे नहीं. एकारणथी. | आकाशथी परुधाना मायाप

नहीं तेम से पाए सुखरिना संजय क्षेत्रे.

सयमेवसंजमीया आगासप्रियाइव ॥

विनाविचारी ज्ञापाना बोलणहार. वांजना पुत्रनीपण असत

निधधंसजासिणो वंप्रा पुत्ता इव ॥

व्यालिंगना धारणहार जिहांतिहां सूत्र जणे तिहां.

द्वलिंगधारीणो जथ्यतथ्येवसुत्तमवगाहि

तपना चोर. वचनना चोर. सूत्रना चोर.

तवतेणिया वयतेणिया सुत्ततेणिया ॥

अर्थना चोर. साचा अर्थ ज्ञां | भूतनी पेटे नाचशे ते कुमति
जशे. जूठा अर्थ करशे ते. | भूतरूप जाणवा. ४

अथ्यतेणिया चूयाइवणच्चस्संति ॥४॥

हे पार्वती टुंढकणी ! इस व्यवहारसूत्रकी चूलिकाक
चोथा स्वप्नमां जो लिखाहै कि 'भूत नचेंगे' इस मुजिव त
तेरा जौनसा मत है सोइ भूत नचते है. क्योंकि इस स्व
के फलमें श्री नड्वाहुस्वामी कहते हैकि पूर्वाचार्योंकी प
रंपरासैं रहित, स्वच्छंदाचारी, अपने आप विनागुरु संय
लेवेंगे. जैसें कोइ आकाशमेंमें पमे उनके मावाप नही हों
है वैसेही विना गुरु अपने आप संयम लेवेंगे. विना विचा
बोलनेवाले. वांजके पुत्र सदश असत यानि नही जैसें, ९
व्यालिंगके धरनेवाले जिहांतिहां सूत्र जणेंगे तिहां तप
चोर, वचनके चोर, सूत्रके चोर, अर्थके चोर यथार्थ व
र्थकों मिटाके जुठे स्वकपोल कल्पित अर्थ करेंगे-वे कु
तिजन भूतकीतरे नचेंगे. सो हमकों यथार्थ मालूम होया
जौनसैं कुमतिरूपी भूत श्री नड्वाहुस्वामीने कथन करे
सो तुमहीहो. क्योंकि पूर्वाचार्योंकी परंपरा रहित अपने आ

बकपोल कल्पित आचार आचरनेवाला और स्वयमेव सं-
 यम लेनेवाला तुमारा गुरुथा. क्योंकि उन तुमारे गुरुका
 तोइसी गुरुथा नहीं. और गण्पदीविक्रममें जो गुरु परंपराय
 लेयीहैं सो सर्व बकपोल कल्पित पार्वतीने लिपीहैं. इस
 बातका सर्व निराकरण जामे करंगे. तुमारा आदि गुरु
 कोइ न होनेमें आकाशमें परे श्रद्धा नुम हो. तपकी चो-
 ती करनेवाले नुम हो क्योंकि जगवानके कथनमें विपरीत
 करतेहो वचनके चोद नुम हो क्योंकि जगवानके वचनोंके उच्चा
 एक हो. जैनमतके सर्व सूत्राको नती माननेमें सूत्रके चोद हो.
 पर्वोचारोंके अर्थके जामेके अपनी मति कल्पनामें विप-
 रीत अर्थ करने हो इस वाक्ये अर्थके चोइसी तुमनी हो.
 इस उपरके लोषके सिद्ध होनाहै कि तुमनिर्गपी भूत तुमनी
 हो उर तुमनी नचते हो.

पृष्ठ ५ वें पार्वतीने लिख्य संवत् १७३० के लगत्त
 गग वषी काल पत्ता लिखा है सोही इउ लिखा है. क्यों
 कि किर्मीली इतिहास नवरीपमें गी लिखा है कि उक्त
 संवत्में गग वषी काल पत्ता था. बलके उक्त संवत्में नो
 सर्व सिद्धमानमें गजा भजा और सर्व मतों के धर्म और वि-
 शेष कर्के जैनधर्म प्रचलित था. और श्री नंदीजी सूचकी
 आश्रीकी ३७ वीं गाथामें तथा जामा, दीक्षा, स्वयंमे लि-
 खा है कि श्री मंडिजाचार्यके समयमें गग वषी काल
 पत्ता था. सो मंडिजाचार्य श्री जगज्जल गुरुवरि स्वामीके
 २० में पाद उपर हुआ है. और गिनके समयमें कदाय
 शान था. पुस्तकानुद नहीं हुआ था. अब वाक्ये पार्वतीने
 गग वषी काल संवत् १७३० में पत्ता लिखा उनमें जो
 वषी भूती गग लिखनेवाली सिद्ध होती है.

पार्वतीने पृष्ठ ७ में लिखा है कि "जैनतत्त्वदर्शमे दि
खा है कि साधु चैत्य उच्यते रक्षा करे यथात चैत्य उ
च्यते नाश करनेवालेको हटाने, मना करे" यह लेख ३
नशाखानुसार तो सत्य है. परंतु पीछे पार्वती हुंकारणी
यह लिखती है कि 'ऐसा काम करनेसे साधुको धन
मालकीयत हो गई.' हम पढ़ते हैं कि उस पार्वतीकोही का
पुरुष उम्वान्नादि छोटे जावोंमें अनेक प्रकारके उपद्र
करता होवे तब चारोयणीमेंसे जितने पुरुष उपद्रव दूर
रणमें उद्यम करे और उपद्रव दूर करे तो क्यावे सर्व
रूप उनके मालिक हो गए? नहीं हूए. इसी तरे साधु
रक्षा करनेसे धनका मालिक नहीं होता है.

पार्वतीने येही पृष्ठमें लिखा है कि वारावर्षी कालमें
ष्टाचारी होके यतिजी यतिजी तथा संवेगीजी संवेगीजी
हाने लगे यह लेखमें लिखने वाली महा मृपावादी सिद्ध
होती है क्योंकि संवत् १७०० के लगभग जबसे श्री गणिस-
स्य विजयजीने और उपाध्याय श्री यशोविजय गणिजीने
बहुत कठिन क्रिया करी और वैराग्यके रंगमें रंगे गये तब
श्री संघ उनको संवेगी कहने लगे. क्योंकि श्री उत्तराध्या-
यन सूत्रके ३९ मे अध्ययनमें ऐसा पाठ है-संवेगेणं न्ते
जीवे किंजण्ड इहां संवेग नाम वैराग्यका है. संवेग होवे
जीसको सो संवेगी. यह गुण निष्पन्न नाम है. सर्व पंक्तो-
मे प्रसिद्ध है. यह यथार्थ गुणनिष्पन्न नाम यति और सं-
वेगी सुनके पार्वतीको क्यों अनिष्ट लगता है?

पार्वतीने लिखा है कि संवत् १७३० मे वारावर्षी उका-
ल पना तिममे कितनेही सूत्र विच्छेद हो गये. यहनी एक

गण्य जिनसे हैं. क्योंकि वारा वर्षका काल तो स्कंदिलाचार्यके समयमें पहिले पत्ता और देवादि गणित द्वाया श्रमण-जीने पुस्तके तो पीले लिखे हैं. तो फेर वारा वर्षके कालमें शास्त्र कैसे लिखे हुए व्यवहृत हो गये !

तथा दुर्गा पृष्ठमें उगीने लिखा है कि " संवत् ११०० के लगनग मृगश्रीकी टीका रची गई है." यह लेखनि नि गकी अज्ञताका है. क्योंकि संवत् ५०५ में तो श्री हरिश्चन्द्रमुनि दिवंगत हुए. तिनकी रची श्री व्यावश्यक, पञ्चवणा, नीर्वाणगण, नदी, दश धकात्रिक प्रमुग्य आम्बोंकी टीका है. और १४४४ ग्रंथ उन्ने रचे है. श्री शीलाकाचार्यने भवत् ७७२ में आचारंगानादिकी टीका रची है. और विशे-पावश्यककी टीका सोपद्ध श्री जिनचन्द्र गणित द्वाया श्रमणजीने रची है. जो श्री हरिश्चन्द्रमुनिमें पहिले हुए है. मयें ज्ञाप्य और चर्णा टीका मयें पूर्वधारीयोंकी रची हुई है. नवांगकी टीका श्री नन्दयदेयचरुनिने संवत् ११०० के लगनग रची है. इन मर्दानायोंने जो टीका रची है वे मयें गुरु परंपरायमें कंठाग्र अर्थोंकी बारणा चली आइयी तो रची है. इन टीकादिके अनुगारे पामचंदने ज्ञाप्य कि-चित्त मात्र दृष्टान्त अर्थ लिखा है. जो इन दुंदक दुंदकणी-योंको व्याख्यान है. परंतु इन दुंदक दुंदकणीयोंने दृष्टा-र्थमें हस्तान्त जगत्के कुछ योग्यता आम्बी अर्थानाम रच दया है. संवत् १००० के पहिले लिखे अर्थ तो प्राये उ-रयें गुरु है. इन दुंदकोने बने मार्ग कर्मके बंधन बधि है. एत आचर्यचरनाप्त ग्रंथ जिनमें अग्रमम नगमम मिलाके नरीस रच लीना है. क्योंकि संवत् १००० में पहिलेकी लिखत हुनरे अन्वित आचर्यकर्ता नहीं निगजती है. वस्तु

नहीं लिखा है कि श्री महावीरजीके शासनके माधुयोंकी पूजा जस्मग्रहमें बंद हो जावेंगी और विना गुह्य मन्मोहपंथी मुहबंधे हंडकाकी उदय उदय पूजा होवेगी. वारुणी पार्वती हंडकाणी ! नृने नो हाथीके पेटमे शूल हृद्या और गदहकों जुलाव दे दीये समान करा. शेष दशमी अग्यारमी पृष्ट जूनी स्वकपोल कल्पिन लिखी है. अग्यारमी पृष्टकी १६ पंक्तिमें पार्वती लिखती है. शास्त्रानुसार क्रिया माधक, न्यागी माधु ज्ञानजी प्राचार्योंके हंडके उनके पाम पैता-लीमननोने दीक्षा लीनी. हमनो जानतेयंकि विचारें हंडक अनपमंड इम वाम्ने जठ माच गोलके अपना काम चला-ते है परंतु पार्वती नो पदी कहाती है और गुणावादीयोंकी प्रगप्रापिनी नीकली है. क्योंकि अमरसिंह हंडकाके २मे हंडक अमोघनरुचंदजी नो अपनी लिखी हंडक पहचानलीमें लिखता हैकि ज्ञानाचार्य जिनधारी था अर्थात् संयम र-टिन था.

पृष्ट १७ पंक्ति ५ मीमें पार्वती लिखती है कि " सं-वेगी लोकजी मेमें जानें है कि हंडकमन कुलक ज्यादा १००० शास्त्री र्णमें लिखला है" यह नो उमने यमी गण्य लिखी है क्योंकि जिनमनके माधु नो हंडक मयतां इष्ट सं-वत १७०० में कर्तव है नर नो संवत १७४७ तक २३७ वर्ष होते है.

होना नो पार्वती हंडकाणीने हंडकानाम प्रकटोरे हेतु लिखे हे मो मय गण्ये लिखे है. क्योंकि लखनौको फया गुण्य म-कानन रहनेनो भिनाया. उम देसमें एहे मकाननो हंडक-हंडे है. उम मकानमें रहनेमें लखनौका नाम ली गोनै हंड-क गणा है. एह कथन हंडक पहचानलीयोंमें लिखता है. एह

श्री अष्टनिर्गुणिक आगममें श्री नक्षत्राह्वस्वामी चोदइ
पूर्वयोगेन ऐमा कदा हे. गाथा.

संपाद्म रयेरणु, पमङ्गाणव वयंति मुहपत्तिं॥
नासामुहं च बंधइ, तीए वसाहिं पमङ्गतोद्ध
अस्यावचूरि. संपात्तिम सत्व रक्षणार्थं ज-
ल्पद्भिर्मुखे दीयते । रज सच्चित्तरेणुस्तन
प्रमार्जनार्थं मुखवस्त्रिकां वदंति । नासिकां
मुखं च बध्नाति तथा मुखवस्त्रिकया वस-
तिं प्रमार्जयन् येन मुखादौ न रजःप्रवि-
शति ॥ ६४ ॥

असौ ज्ञान-संपात्तिम जीवात्मी रक्षा वाप्ते चोदतां
शक्तं पुन आगे मुखावस्त्रिका देवी त्वं न रजिन रजके प्र-
मार्जन वागे मुखवस्त्रिका रयनी गाणधरादि कर्तव्ये हे. जव
रजिन प्रमार्जन कर्तवी तव तिन मुखावस्त्रिका कर्तव्ये नाक
मुह दोनो बंधने. मुखादिमं रज न पके इय वाप्ते. ६४

पार्वती देवकामोक्षां शरणं मानं आश्रयंसे मुह वा-
जंका पाठ दिगलाना वाशिने.

पार्वती पुत्र १६ में लिखती है कि 'मुखापन रते मो मु-
खावस्त्रिका. 'तौ नो हाथये रते मो हाथवस्त्रिका' वा अ-
स्त्रिय पार्वतीने तथा कर्त्तमेन, व्यासमुह, दीर्घा वा अस्त्र-
सोपदन्ती रती इ. लिखी तनीन व्यासमुहाने लिखी है
'पार्वति रयन रजिन अवावस्त्रिकां नो ऐसा उच्यं नदी ही

मंगल के लक्षणों के कारण मंगल ग्रह के लक्षणों के कारण
 शिवा मुकुन्दनिन्दना पत्रिका मंगल ग्रह के लक्षणों के
 कारणों के कारण पार्वतीने सा मंगलग्रह के लक्षणों के
 जो पूर्वोक्त भण्डान समान संभव है । किन्तु यह मंगल
 नीलहो मङ्गलमें परनेमें मंगी मङ्गल तदा व्यन्य पङ्गलने पर
 के लं जोन है ता ता कठने लगी के में । किन्तु तादशा
 जाती हं. जब बोलने लगी ता उतां उतां कठने लगी त
 व्यन्य जानवगेने जाना के गह जो मंगी हउ मीदमी है"।
 मंगी पार्वती हुंढकणी मङ्गल उंढकणमें पंमिलानी तन मङ्गी
 परंतु जब अद्बोधवाजे उमङ्गी पंथी नांनेगे तन त्राप
 मेव पूर्वनी व्यन्निमानपरित जानेगे

पृष्ठ १६ में आगे लिखती है कि " रजोहरणकी दृ
 लमें मोरी पावणी कहां चली है ?" उत्तर-तेरे माने शास्त्र
 तो मुहपत्तिका मोरा, सामीका मोरा, रजोहरणकी दा
 योंका मोरा नहीं चला है जो तुं इन तीनों मोरोको
 मती क्युं नहीं है. किस शास्त्रके कठनेमे तुं पूर्वोक्त ती
 मोरे रखती है ?

अथ इससे आगे पार्वती हुंढकणीने जो जो उपा
 नतखादर्शके लेखमें लिखे है तिनका समाधान लिखते

पार्वती पृष्ठ २० में लिखती है "श्री हेमचंद्रसूत्रि
 को पांच वर्षकी उमरमें दीक्षा लिखी सो विरुद्ध है क
 कि व्यवहारसूत्र तथा जगवतीसूत्रमें आठ वर्ष जन्मसे न
 होवे तिसको दीक्षा देना नहीं कल्पे है ऐसा कथन है."

उत्तर-श्री व्यवहारसूत्र तथा जगवतीसूत्रमें जो क
 है सो उत्सर्ग मार्गकी अपेक्षा कथन है. और अपव

मार्गमें आठ वर्षमें ठोड़ी उमर वालेकोनी दीक्षा देनी क-
ल्पेई. इस कथन निशीथ ज्ञानमें है. इस वास्ते विरुद्ध
नहीं है !

पृष्ठ २२ में लिखा है कि "श्री हेमचन्द्रमूर्तिर्जाने गाढे
नीन करोरु ग्रंथ रचें लिखे हैं नो जूठ है " उत्तर-जूठको
मचनी जूठही मालुम होता है क्योंकि कल्पद्रुम टीकामें
लिखा है 'श्री हेमचन्द्रमूर्ति गाढे नीन करोरु ग्रंथका कर्ता
आ है. हमारे संमतायमें श्लोककोनी ग्रंथ कहते हैं और
एण पाण्डकोनी ग्रंथ कहते हैं. फेर पावनी लिखनी है
तने श्लोक रचे नहीं जा सकतें हैं. उत्तर-एक अंतर्मनुष्यमें
पाण्डदेव चौदहपूर्व किम तरेमें रच लेतेथे? जेकर कर्तनी
नो ललियमें रच लेतेथे नो इनके रचनेमें ललिय क्यों
ी मान लेनी. पावनी कहती है 'ललिययां नो व्यवच्छेद
गइ है.' उत्तर-तरे माने हुए किम घाव्यमें लिखा है कि
'रचनेकी ललिय व्यवच्छेद हो गइ है. पावनी-इनने श्लोक
कर लिखे? उत्तर-उनकी मजायें मंगलमें पंमित व्या-
ग, काव्य, छलंकार, न्यायादिक वेत्तायें, और बार
न देवायां महायक थी. यह बधन श्री गिनपविजय
व्यासजी ईम व्याकरणकी टीकामें लिखते हैं. शर्वनी
में विचार हो कर के १०० पंमित दिनभरि भी सो
लिखे नो पचास वर्षमें प्रशान्दोरु श्लोक लिखे-
गाढे तीनकरु नो दस वर्षमें पूरा हो जावे.

पावनी लिखनी है कि "सुनायिया लनमान है" श्री
सुनायिया मंषपिवाका नाम है वा लन्य किमी प्रस्तुतानाम?
लन्य मंषपिवाका नाम है मष तो पावेत थी सुधर्मनामि
मषु लन्यक लानायोकी आजायना करनेवाली है. क्यों

कि सूत्रोमे जहां सुधमे स्वाम्यादिकोका वर्णन लिखा है
 तहां ऐसा पाठ है. विद्या पहाणे मंत पहाणे मंत्र
 विद्याके जाणनेमें वरु प्रधान अर्थात् सामर्थवान् है. इस
 प्रकारसे गणधर तो मंत्रविद्या जाननरूप वरु गुण लिखते
 है और पार्वती भूत विद्याको अप्रमाण लिखती है. १

पार्वती पृष्ठ १४ में लिखती है कि “चेद्यवृद्ध अर्थात्
 ज्ञानवृद्ध” यह पाठ खोटा है और अर्थहीन जूठा लिखा
 है. क्योंकि श्री समवायांगजीमें ऐसा पाठ है चेद्यवृद्ध
 टीका ब्रह्मपीठ वृद्धा येषामधःकेवलान्युत्पन्नानीति
 चैत्यवृद्ध, चौतरावध्ववृद्ध जिनके हेतु केवल ज्ञान उत्पन्न
 हुए थे. चैत्यवृद्धका जो पार्वतीने ‘ज्ञानवृद्ध’ ऐसा अर्थ
 लिखा है सो मिथ्या है क्योंकि चौतरावध्व वृद्धका नाम
 चैत्यवृद्ध है. देव लोकादिमें तथा नमि प्रव्रज्या अध्ययनमें
 श्री चौतरावध्व वृद्धोका नामही चैत्यवृद्ध कहा है.

फेर इस पृष्ठमें पार्वती लिखती है कि “तीर्थकरोंके
 दीक्षावृद्ध सूत्रोंमें नहीं चले है इस वास्ते विरुद्ध है.
 उत्तर-तीर्थकरोंके १७० एकसौ सत्तर सत्तर बोल सप्तविंश
 स्थानक सूत्रमें लिखे है उसमें दीक्षाका वृद्धही लिखा
 है और तेरे माने सूत्रोंमें जेकर सर्व बोल नहीं निकलेंगे
 विरुद्ध किसके साथ हुआ. क्या जगवंतका ज्ञाप्या स
 ज्ञान तेरे माने शास्त्रमें आ गया? ३

पद्मप्रज्ञ और वासुपुत्र्यजीके दीक्षा तपका जो लिखा
 गोथ लिखती है सोही अज्ञापणमें लिखा है. यंत्र लिखा
 ने वालेने किमी ग्रंथांतरसे मतांतरसे लिखा हावेगा. ४

मल्लिनाथजीका जन्म कल्याणक जो मथुरामें लिखा

है सो यंत्र लिखने वालेही भुज है. मिथिलामें मथुरा लि-
खी होवेगी. श्मीतरे श्री नेमिदीका कल्याणक जो मोरी-
पुर लिखाई सोनी यंत्र लिखने वालेकी भुज है. ५

श्री माह्विनाथजीको जो अठोरत्र उग्रम्य लिखा है
सो मनांनरमें है क्योंकि नमनिशनम्यानक सूत्रमें अठोरत्र-
काही उग्रम्य काल कहा है. जेकर मनांनरकी वाते सर्व
जुडी मानेगी तो तेरे माने रचीम सूत्रोंमेंनी परस्पर बहुत
विरुद्ध कथन है तब तो तेरे माने सूत्रको जुडे हो जावेंगे.
ध्यान निश्चय बाव तो यह हैकि चौविश तीर्थरुगोंके एकमें
सत्तर साल रचीम सूत्रोंमें काह दिग्जाले तब तो विरु-
द्धा विरुद्धता विचार होवे. नहीं तो फांगट छुदनेमें क्या
होता है ? ८

पृष्ठ २६ में पार्वती लिखनी हैकि कृपजदेवकी मा-
रलोमें बलदेका चिन्ह लिखा है ज्यो फेर चौथांम तीर्थ-
रुगोंके पगोंमें लक्षणा चिन्ह है यह परस्पर विरुद्ध है.

उत्तर-जो माथलोमें चिन्ह था उममें तो कृपज नाम
रखा गया है. ज्यो तो पगोंमें चिन्ह था सो तो ज्यो अन्य
थैरुगोंके पगोंमें चिन्ह थे तैने श्री कृपजदेवकीके पगों-
में बलदेका चिन्ह था. उममें परस्पर विरुद्ध रखा हुआ है.

पृष्ठ २६ से ३० तक पार्वतीने जो अग्रमम मगमम
था है निम्नका उत्तर-लेखनजाइया ग्रंथमें जो कुछ लि-
खा सो सर्व प्रारंभ ग्रंथ या पद्यावली ना आत्तरिध्यादि प्र-
त्यनमान लिखा है. पार्वतीके देवकी जो द्वां ग्रंथों-
मेंकी देवकी लेखनीकी है सो उमकी भुजका है. कदा
अनमनक साओमें ज्योतिष, धर्मक, संव, नैव, नमोदय
सर्व विषयमें लेखनीके

क्या है, इन्हे तो लिखा न तो है, जेमा जगा २० ६, जे
 कान, ज्ञान हीरे २०, तेनी जेमा जे पा पायो २० ६
 रचित होती है, किसी जग पणपतामके नामे मंसा
 रने पमते है, किसी जग पणनी म साके नामे मंसा
 रने पमते है, किसी जग जैन मंसाकी पजातनाके ना
 मंत्रादि करने पमते है, किसी जग मंसादि करनका मने
 निषेध है मने शाय चन्द्रगर्गापादरूप है, श्री धर्मसोपा
 र्यने तथा सिद्धसेन दिवाकरादि आचार्योंने जो कुछ
 होवेगा सो छव्य केनादि देगके करग होवेगा. उनकी
 वत पार्वती बोल बोल करती है परंतु येह विचारी जैन
 शास्त्रोंका क्या जानती है. हमारे तो आमाज्ञा मान
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है, और जो लंस
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्वा पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु
 है. और जो पूर्वाचार्योंने लिखा है सो सर्व लोकनी
 धर्मनाति, सोमनाति, कादवनीति, अर्हनीति, वारतुशा
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोंके अनुसार लिखा है. छव्य जी
 काँ अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममे दृढता आ
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू
 र्वाचार्योंके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा
 र्योंने सावय्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन
 चकं जो कोइ सावय्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव
 आचार्योंका पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुं तो कुगुरोकी वहकाइ होइ
 इस वास्ते तुं सावय्य निरवय्यका स्वरूप नहीं जानती
 सावय्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषको क

ना है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है सो मावयोपदेश नहीं कहा जाता है. जेकरनुं शास्त्रकी लिखनकों मावय मानती है तो श्री चंद्रपणचि और मृच पद्मचि शास्त्रोंमें अठारवीस नक्षत्रोंके जोजन कहे हैं. इम नक्षत्रमें यह वस्तु खायकर जाये तो कार्य मिश्र होय. तिनमें कितनेही नक्षत्रोंमें अन्नरु वस्तुओंके जोजन लिखे हैं. अय इम पत्रने है यह जगवतका कहना और गणेशगोका गंधना मावय है वा नहीं? जेकर कहेंगी मावय है तब तो तेनुं जगवतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शास्त्र मानय मिश्र हो जावेगा. जेकर कहेंगी जगवतने किमीको अन्नरु पानेकी आशा तो नहीं दीनी तो तय पत्रने है. ऐसे ज्ञान कथन करनेमें जगवतकों क्या ज्ञान हुआ? और शास्त्र शानतेनालेकी क्या ज्ञानदर्शन चाखिती वृत्त हुए? इम सोचनेमें जिनाज्ञाता आगवना क्या मिश्र हुआ? मया इम पाठकों सोचकर जो कीउ प्रयोग नक्षत्रोंमें प्रयोग अन्नरु माकर अपना कार्य मिश्र करेगा तब मय कर्षाकों क्या ज्ञान होवेगा? इम सोचमें रहनेका यह है कि न काणी इच्छणीकी तरे एक पाणकीही घनसीदा या जाननी है—जिन ग्रंथकों तथा मान लोका सो मय हो गया और जिन शनिपाके दिय कर्के आचार्योंके रणे ग्रंथकों मावय और निश्चक उद्गमवीण. इम ज्ञाने तुं नृगुणके शक्तों लोम्के किमी नृगुणकी मया कर जिनमे को. मावय निम्नवरी पावर पमे.

और शरीरय शास्त्रों नुं पापद्व लिखा है परंतु किमी शास्त्रमें नहीं लिखा है. इम पुन जेवया हुककों मया देम जेता चाखिण उद्देश तो कार्य केंद्रनयों मया

नमस्ते. तन्मतेना निषेधा न वि ते. जगता जगता जगता, ते
 जगता, जगता जगता जगता. नती जगता जगता जगता जगता
 वृत्ति होती है किमी जगते परमेश्वरके नामे मन्त्रादि
 रने पकते है, किमी जगते जगती मन्त्रादि नामे मन्त्रादि
 रने पकते है, किमी जगते जैन मन्त्रादि पञ्जातनाके व
 मन्त्रादि करने पकते है, किमी जगते मन्त्रादि कर्मका म
 निषेध है. सर्व शास्त्र उत्तमार्गपनादरूप है. श्री धर्मयोगा
 र्यने तथा भिक्षुमेन दिवाकरादि पाचार्योंने जो कुछ
 होनेगा गो ज्ञव्य हेतुवादि देगके करग होनेगा. उनकी
 वत पार्वती बोल बोल करती है परंतु येह विचारी जैन
 शास्त्रोंको क्या जानती है. हमारे तो शाराज्ञा मान
 सदाही ज्ञानदर्शनचारित्रकी वृद्धि है. और जो लंग
 जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें है सो सर्व पूर्वाचार्य रचित ग्रंथानु
 है. और जो पूर्वाचार्योंने लिखा है सो सर्व लोकनी
 धर्मनीति, सोमनाति, कादवनीति, अर्हचीति, वास्तुशा
 शिल्पशास्त्रादि शास्त्रोंके अनुसार लिखा है ज्ञव्य जी
 को अनेक प्रकारका ज्ञान होनेसे धर्ममे दृढता आ
 होती है.

प्रश्न-तुमने तो जैनतत्त्वादर्श ग्रंथमें लिखा है सो पू
 चार्योंके ग्रंथानुसारही लिखा होवेगा परंतु तुमारे पूर्वा
 र्योंने सावद्य वचन क्यों लिखे? क्योंकि तिनके वचन
 चके जो कोई सावद्य काम करेगा तव ग्रंथ रचनेव
 आचार्योंको पाप लगेगा के नहीं?

उत्तर-हे भोली! तुंतो कुगुरोंकी वहकाइ होइ
 इस वास्ते तुं सावद्य निरवद्यका स्वरूप नहीं जानती
 सावद्य उपदेश उसको कहते है जो किसी पुरुषको क

ता है तुं यह काम कर-परंतु शास्त्रोंमें जो कथन करना है
 वो मात्राप्रदेश नहीं कहा जाता है, जेकरमें शब्दकी
 लिपनकी मात्रा माननी है तो श्री चंद्रप्राज्ञि और मय
 पञ्चि शास्त्रोंमें प्रहावीश नक्षत्रोंके जोजन कहे है, इस
 नक्षत्रमें यह यस्तु प्रायकर जाये तो कार्य सिद्ध होवे, नि-
 नये कितनेही नक्षत्रोंमें अक्षर यस्तुओंके जोजन लिखे है,
 अथ हम पूछते है यह जगदंतका कहना और गणेशोंका
 गंयना मात्रा है वा नहीं? जेकर कहेंगी मात्रा है तब नां
 तेनुं जगदंतकी आशातना करनेका दोष लगेगा और शाय
 मात्रा सिद्ध हो जायगा, जेकर कहेंगी जगदंतने किमोंको
 अक्षर मानेकी आशा तो नहीं होती तो हम पूछते है,
 अथ ज्ञान कथन करनेमें जगदंतकी क्या आज्ञा है ?
 और शाय वांचनेवालेकी क्या आज्ञादर्शन चारित्र्यकी वृद्धि
 है? हम वांचनेमें जिनाज्ञाता आराधना क्या सिद्ध है ?
 तब हम पाठकों वांचकर जो कोइ पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें पू-
 जोंका अक्षर मात्रा अपना कार्य सिद्ध करेगा तब तब
 कर्त्तव्य क्या आज्ञा होयेगा? हम ज्ञानमें कथनेका यह है
 कि तुं कर्त्तव्य दृष्टान्तोंकी तरे एक पाठकोंकी देखनीया
 या जाननी है—जिन ग्रंथों तथा मान लीया वो मंग
 हो गया और जिन ग्रंथोंके लेख करने आचार्योंके रूपे
 ग्रंथको मात्रा और निरर्थक ग्रहणार्थक, उन ज्ञानमें तुं
 पुस्तकोंके मतको ग्रंथोंके किमी मन्तुओंकी सेवा कर लिखे
 वृत्त मात्रा निरवमही मात्रा परे.

और नक्षत्रोंका मात्राकी तुं पापग्रह लिखा है परंतु
 किमी शास्त्रोंमें नहीं लिखा है, हम ऊंच लेखका तुंको
 पता कर लेना चाहेतु, अथवा जो ज्ञानी जेकरमें रत्न

उंमं साधु निम नदीकीं उल्लंघके जिदग ले व्याने. ३ क-
 ल्पसुत्रमें लिखा है योनी योनी संयती उंदि पन्नी होवे
 तो म्वाविकल्पि साधु जिदग ले व्याने. ४ श्री जगन्नी-
 जीमें कहा है श्री संयका कामपने तो साधुहायमें वज्रवार
 लेके उंमा व्याकाशमें जाये. ५ इत्यादि उनेक मायोंके पात्र
 है जिनमें लिखा भवद्व द्वीप पदती है तो फिर साधु या
 पदके चाम्ने हिमा को श्रीम श्रानक पदते चाम्ने हिमा न
 करे यह समज सुखोंकी है क्योंकि माग सज्जनिशीथमें
 जिनमेंदिन उकांने आलेको चाम्ने देवशोक जानेका कल्प
 कहा है. श्रीम श्रीमाकी पूजागत फल राज मन्थीय सुत्रमें
 मोक्षका काा है. श्रीम पूजामें पूजा करनेमें संसारका हान
 होवे जैसा फल श्री मावश्यक मन्थमें कहा है तो फिर वि-
 गके निपेचनेमें कल्प्य संयती चत मिथ्या मीष्टियोंका
 लक्षण है.

पृष्ठ २॥ में में गावेतो देवतणीने जो श्लोक लिखा है
 सो यह है.

ग्रन्थस्थानं करोतिपापं धर्मस्थानं विवर्जिततयाः
 धर्मस्थानं करोतिपापं ब्रह्मकर्म विवर्जिते ॥१॥

मन्थ में यह श्लोक बनीन सुखोंका नहीं है और उंमं
 पयवेतो लिख है. श्रीम निम पन्नीने यह सोचो मन्थ
 तमी है मिथ्या संनिपादनी उंमं श्लोक में देवतनेमं माव्य
 रीतानी है जब पार्वतीकी संनिय करकेमे सुख संनिपादने
 करनी संनिपादना करवाने तमी है पार्वतीकोलो अक्षर
 प्रान तो जैसा है श्रीम संनिपादना मन्थ में यह वा-
 श्य करनी है.

हम प्रविष्टाग्नि के मांस का जीव जिन्का रूप धरने वाला
विनाशी नरगि ज्योत्स्नामय तो जानता नहीं है।
अग्निदानमें पाकर अग्नि प्रविष्टानी, योगा भवन
मनमें पाया जेगा लिंग दीया है

पृष्ठ ३७ में लोकानर प्रविष्टानका रूप जो
त्वादर्थके लेगमें लिगा है गां मय है पांग जो नान
कारके नर पक्षिके नाना प्रकारके कार्योंके नामने
करनी कहो है मोजी मय है त्योंकि जैनमतके शास्त्र
असाधी लेख है और जैनमत अनेकांत स्थावररूप है
किरी मंड श्रद्धावालेको तो मिथ्यात्व है और तीव्र श्रद्धा
वालेको मिथ्यात्व नहीं है यर कमलीकी नथ नहीं है।
किंतु कुगुरोंके मतकी वाचनाका प्रभाव है जो
नहीं समझना

पृष्ठ ३७ में लंके ४२ मी पृष्ठ तकके लेखका
“दान तप पूजा सामायिक फटे कपटोंमें करे तो।
है” यह लेख मस है क्योंकि शास्त्रमें ऐसाही लेख है
पार्वतिके माने वत्तीय सूत्रोंमें गृहस्थ फटे हुए क
पट तप पूजा सामायिक करे तो सफल है। ताव

नहीं है. तो फिर पारिवर्तन जननवादिशोक लेखकों जगत्
 क्यों लिखा है. क्योंकि जो गृहस्थ पढ़े हुए, धर्म अथुनि
 रूपमें ग्रहण, दीनदीन कृपा रक्षणा नियमों तो योगदृष्टि
 समुच्चय शास्त्रमें सम्यक्कर्त्ता नहीं रहा है. जब वो हिनपु-
 ष्यबाला गृहस्थ भवेत्कार्यमें तो शास्त्रोक्त लज्जे कथमें नहीं
 प्रकनेगा तो निम दालिजी ग्रहस्थने दान नप पुत्रादि ध-
 र्मकार्यही गया कर लेना है. और जगतीयादिक शास्त्रोंमें
 जब जगत्त तथा ज्ञानार्थिकोंको बंदना करने वाले
 गृहस्थ श्रावक गये है तब ऐसा कथन करा हैकि प्रथम
 स्नान करा. पीउं देव पूजा करी पीउं बहूत लज्जे संवर्द्धित
 बगानरगा परिस्को बंदना करनेको गपू ऐसा लिखा है.
 परंतु पीउं, अथुनि, स्नान बहिन, जपानाले उमथिन पढ़े
 हुए कथमें परिस्को बंदना करनेको गपू ऐसा तो नहीं लिखा
 है. और जो पारिवर्तने शक्तिशाल मुनिने धर्म करकोसा दर्शन
 दीया है तो जगत्त है क्योंकि जननवादिशोक जो कथन है
 तो प्रथम श्रावकको शोका है. निममें मायुका दर्शन देना
 पूर्वनाका काम है. पारिवर्तने लिखा हैकि कौड पढ़े हुए
 कथमें परिस्को पीउं पारिवर्तने निमका मय धीना नहीं हो-
 वेना. उचर-को पीउं लपने प्रथममें मोगीही जीवन एव
 प्रमोथ धनको पीउं पारिवर्तने नोनहा मय धीना होवेना के
 लर्थे. केकर होवेगा तब तो दुष्टक श्रावकको प्रथोक कर्त्त-
 रमें सामाधिक पोष्य करेगे पर तो हिनकोही बन्त हो-
 वेना तो अर श्राव नि तो एव्य दृष्टी पंक्ति ॥ में लिखा
 है 'अथुनि मय प्रथम करके सामाधिक करे उमका यथा
 निमिन है. और तब तब अथुनि प्रथमका पर तो लगीकी
 मयथ अथुनि होना नादिष. पर तो बिना दान वेही नहीं

शकता है क्योंकि रात्रको स्त्री संगदि करेगा तो प्रातःक
फेर स्नान करके शुद्ध होके फेर शुचि वस्त्र पहरेना होके
पार्वती विचारी कहीं कहीं यथार्थभी लिखती है प
क्या करे दुंदक मतानुसार तिसकां कहीं कहीं मलीनता
जी पसंद करना पमता है.

पृष्ठ ४० मे मे सामायिक पूजामें जो विरोध लिखा है
सोजी वृथा है क्योंकि सामायिकमें छव्यपूजा करनेका
श्रावकको निषेध है और निर्धन श्रावक जो सामायिक
करनी गोमके छव्यपूजा करे तिसका कारण यह है कि
निर्धनको पूजा करनेकी सामग्री मिलनी उर्लभ है. और
सामायिक तो जब चाहे तब कर सकता है. इत्यादिक सर्व
जैनतत्वादर्श में लिखा है

और जो मकमीके जाले उतारणे वावत लिखा है.
सो सत्य है जैन शास्त्रमें ऐसाही लेख है, परंतु जो
लिखा हैकि श्वेत रंगके मकमीके जालेमें अनेक अंमे
है वे तत्काल मरजावेंगे यह सर्व पार्वतीने मिथ्यात्वके
दयमे झूठा लिखा है क्योंकि जैन तत्वादर्शमें श्वेत रं
अंमेवाले जालेका लेखही नहीं है. जो लिखती है "ज
उतार गेरे तो यत्नही काहेका है?" उत्तर-शास्त्रमे लि
है जब माधु नदी उतरे तब यत्नमे उतरे; जब कचे प
णीमे पग रस दीया तब त्रमथावर अनंत जीव तो मा
दीप फेर यत्न काहेका दुआ विचार कर पार्वती !

पृष्ठ ४१ में पार्वती तीन प्रकारकी पूजामें दूषण लिगत
है मोती इमकी मूर्पता है क्यों कि जैनशास्त्रोंमें जगंत
श्रावकको तीन प्रकारकी पूजा करनी कही है. और जिम
पूजामें जो विशेष फल है मोती कहा है. इम्मं इन ति

- श्री पूजा में जिन राजा की आज्ञा है और जिन पूजा में जिन राजा की आज्ञा है दोनों
 १ पूजा में जिन राजा की आज्ञा है और जिन पूजा में जिन राजा की आज्ञा है दोनों
 २ जिन राजा प्रमाण होगा वो मंत्र फलकी ही मानते.
 पूष्ट ४७ में पृष्ट ४४ पंक्ति ११ तक जो कुछ लिखा है
 वो सब राजा का विन्द है क्योंकि यह सब जिन पूजा है
 विधि में है और आज विधि में वास्तु शास्त्र में लिखा है वो
 वास्तु शास्त्र के श्लोक हमारे पास है, परन्तु हम पूष्ट में
 लिखे जाने शास्त्रों में यह लिखा है कि नगपंचके पंदिने में राजा
 लिखी विधि में वसो, किसी दिना वर्य पर करने पूजा करने
 प नहीं है, " " लेकर ऐसा जेना नहीं है वो फल है मध्ये !
 लाई दशोत्तर में मने शास्त्रों के लिखको राजा लिखनी हर
 राजा मने मने नहीं रखनी है ! क्या तुझको इन वि-
 धि में वापस जा नली पाता है :

पूष्ट ४७ में जो शास्त्रों की आज्ञा मीन पंदिने करना
 जिन के सो सब मने है वास्तु शास्त्र शास्त्रों में लिखा है
 पर है, और जो ने लिखको है के "कामनी पर निमित्त
 जो पदार्थों नही कर मन्त्राण " जो ऐसा पाठ में
 माने शास्त्रों में लिखा है, और मन्त्राधी लिखको का
 लिखा है, न ही जो इसे माने लिखको, दूसरे के मने मन्त्र
 नहीं मानना उनको सम रखनी है !
 और जो ज्ञापाने मने सब लिख लिखा मोली
 मने जो लिख माने लिखको मने लिखा है वो
 जो लिख माने मने वो जो वेनी पदिका जो है, वयो
 जो ऐसा मने मने लिखा है मने जो पदार्थों के मने
 पाठ में मने है.
 पूष्ट ४७ पंक्ति ४७ में लिखा है वापस जो लिखा है

नेधी पूजा में जिन राजकी आज्ञा है और योगपूजा व
 ना ग शोने ज्ञापपूजानी है और खल्य पूजानी है. दोनों
 जा निनाज्ञा प्रयागे करेगा ना मोंद फलती ही दाता है.
 पृष्ठ ४२ में पृष्ठ ४४ पंक्ति १० तक जो कुछ लिखा है
 सो सर्व प्रकृतताका निन्द है क्योंकि यह सर्व खेप श्राद्ध
 विधियों है और श्राद्ध विधियों नाम्ब आरुने लिखा है जो
 नाम्ब श्राद्धके श्रोक नाम्ब पाम है. परन्तु हम पहले है कि
 'मेरे जाने श्राद्धों में यह खेप है कि नाम्बके मंदिरमें जाहो
 वे दिशामें बसो, जिनी दिशा तर्क मष्ट करने पूजा करो,
 व तर्क है.' 'नेकर मंसा खेप नहीं है ना फेर है मंगे !
 निनी प्रयोजन में सर्व श्राद्धोंके खेपको तथा निनाधी इष्ट
 श्राद्धोंके मंगे श्राद्ध नहीं मंगी है ! तथा मृगको इष्ट लि-
 खनेमें पापना ज्ञान नहीं जाना है !

पृष्ठ ४४ में जो हजारी की वाक्य मंगे योगरत. कर्मा
 विधा है सो सर्व मंगे 'श्राद्ध वि. श्राद्धि श्राद्धोंमें मंगे मारी
 वि. है और जो बुनिपनी है जो "कुपकरी धर्म निर्मित
 तैह प्रकृतताका तर्क मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 ने नामोंमें श्राद्धादे और मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे, तर्क जो तर्क मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे

और जो ज्ञापके सर्व वाक्य वि. बुनिपनी मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे वि. श्राद्ध विधियोंमें मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे
 मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे मंगे

... अथवा ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...
 ...

पृष्ठ ३७ में पृष्ठ ३८ पंक्ति ११ तक जो श्लोक लिखा है सो धूननामं उग्र लिगा ... ह्यो कि यह वाला जैननाशकका मणी श्लोक गमने नहीं लिखे वामने इसके उग्र लिगनेकी पाठ्यकता नहीं

पृष्ठ ३८ पंक्ति ११ में पृष्ठ ३९ पंक्ति ११ तक जो उमने लिगा है सो गरी अगम है पृष्ठ ३८ पंक्ति लिगा है "नमोऽत्रैह्यलिपथे" श्लोक श्लोक किमीर्न स्वमें नहीं है और इस पाठका जो अर्थ लिगा है स्वकपाल कल्पित लिगा है. जेकर इसके लिगं मुज और अर्थ इसके माने वचीम मत्रोमे निकल आवे इसको सची मानना चाहिये.—जेकर न नीकले पार्वतीको उत्सृत्र ज्ञापक मानना चाहिये. और इसकी "ज्ञानदिपिका"कीं जो सची माने उमकांजी ही जानना.

प्रतिमाके पूजनेके फलों वाचत फेर वो लिख परंतु इस संबंधमें हम उपर लिख आए हैं.

पृष्ठ ५० पंक्ति १० में दृश्य वैकालिककी गाथाका अर्थ जो पार्वतीने लिखा है सो असमंजस है. क्योंकि पार्वती लिखती है कि "भूषण गहने सहित अलंकृत श्रीकों देव नहीं" इस अर्थमें जो भूषण गहने सहित नरन स्त्रीकों देवनेमें निषेध नहीं होगा ! परन्तु इस गाथाका अर्थ पार्वतीकों यथार्थ नहीं आता है क्योंकि इसका गुरुकुल है सो डारि-दर-योका है. इस वास्ते इस विचारकों यथार्थ अर्थकी प्राप्ति कदांसे होवे, क्योंकि मन्वार्थी पुण्यकों रत्न जो जो हरीयाँकी काँठीयाँने मिलता है परन्तु चमाराँने परमें जो गमको हुकमे पचीयाँकी मिलती है. इस वास्ते मन्वार्थीय पंचको उन्नते मेकर श्री गदावीरके शासनके गौतार्थमें श्रीमंती जो इसको यथार्थ आशयोंकी प्राप्ति हो जायेगी.

पृष्ठ ७० में पार्वतीने लिखा है "जो धर्मग्रन्थका हेतु है सो राजका हेतु नहीं है" जो विद्यानाज्ञानके उदयमें लिखा है. क्योंकि श्री आचारंगजीमें लिखा है "जे आर्य स्वया ते परिम्वया, जे परिम्वया ते आर्यन्वा." इसका अर्थ यह है कि "जो आर्यवत हेतु है वेनी नि-म्वयाके हेतु है सो जो निम्वयाके हेतु है वेनी आर्यव तर्कके हेतु है." इस वास्ते पार्वती जो उदयनाथके हेतु उन्नत, स्वर्ग के सुखोपभोग प्राप्त हेतु उन्नत निरर्थक है सो तैत आर्यमें लिखा है इस वास्ते पृष्ठ ७० में लेखक पृष्ठ ६० पंक्ति ३ तक के अर्थमें जो लिखा है सो श्री गुरुजीजरीमल गौर देवकीकी हेतु प्रसन्न लिखी है.

पृष्ठ ९९ पंक्ति ३ में लिखनेन विद्यागर्वा गावन जो लिखा है सो श्री गुरु देवके हेतुमें लिखा है सो लिख

गहरी, महाप्रादिक वाताच्छेदने तथा गैकको श्रावकोने
 मोटव गंमन पृथ्वी करी यह प्रथिकान प्रभागीयेंक,
 प्रथमानयोग शास्यो हे, यह पावनी विधानि विशेष
 वृत्त जाननी नली हे, परंतु त्यांतियान वदत धराती हे,
 पृष्ट ८३ में हे त्रिवर्त हे "जिन मनिषा तां पूर्वेक
 भीमीनीं विदानी हे, तैकर नम कयों शास्यती तां मोत्र
 तेकने हे तां एम शास्यतीं जगतान तां नदीं मानवेंहे?"
 तौषध-मृष्ट नमवावांगते ३५ में नमवागयें विधा हे,
 नर्प्रवागहातां जगवते यथात्र त्रानागंग जगवंकें३५
 नदीं प्रथममे हे "नर जगजनोंको विन्तार बनना चार्हेतु हे
 देव ते प्राधारण मृष्टको जगवेन कर्तव हे, तां

विद्वदनीं कर्त्री रीर "एम शास्यतीं जगजान तां मा,
 रीर" एतमें तां गज्यागमेंसीं चार्हेतु जगजान
 एतें जग नरीं जग एतमें तौं एत कयें विद्वदनीं
 "जग नरीं मानव हे, एम नरीं कयें हे" - जेना वि-
 जग एतमें एमा एमाता तां जगजग हे गया हे जगन
 जगन काही एत नम शास्य ३५; जेकर नये एत एतना
 जगन जग नरीं तां वंद होकरे जौन नर, जेन, विद्वदनीं
 जेनको, तां जगजानो, शास्यतीं वीका पार जे जिनमें ज-
 गनें पावनीं विद्वदनीं हे "जिन मनिषा जिन मनिषीं मृष्ट
 तां देमा पान हे एतमें तां जिन मनिषकीं जिन
 हे, जग जिन मनिषकीं शास्यतीं मर पाट तां हे
 तां मर जगिण्य पावनीं विद्वदनीं एत मोरों
 जिनमें हे.

श्री अक्षय जी महाराजों का नाम रखकर चारों दि-
कार करके नव मासों में १० कं दिन हांतीमें फे-
रीन कीसके अंतमें नाममें सुदरनी सुनायी। उक्त दिनमें
गृहगर्वाधिकार भाङ्गकरा कही क्षमाया। यह बात पञ्जाबके
मैंने जन्मजन्म जानते हैं.

श्री परमेश्वरी श्री आनन्दारामजीके जन्म बहुत बड़ा
गृहगर्वाधिकारों सुनके अज्ञानमें कर्म बुराई है।
उक्त परमेश्वरीने पूरे जन्ममें दुर्गरी कर्म करके जिनमें सबसे
सबक पंगाल, भोज, कनेले, जयां ताडोया कर्मों छोड़ यों
तिरियाखले हणु है, इनमें श्री आनन्दारामजीका क्या और है
श्री जो परमेश्वरी लिखती है 'आनन्दाराम सुदरानी पूरन
किरवा है.' फिर पृष्ठ ७३ में लिखती है कि आनन्दारामजीके
जन्मकाष्ठमें परमेश्वरी श्री आनन्दाराम के कर्मों में 'पुनः
कीरने है' लिखा है इस कारणमें सेनता लिखा है. यह
परमेश्वरी लिखती रही आनन्दाराम सुदरानी का
संग है.

पृष्ठ १० में लिखते हैं कि उक्त बातों को मानने किफायत
विनया सुदर लिखनेमें आनन्दाराम लिखनीय ही पूना
रामे है और लिखनेमें उक्तका मानने के को परमेश्वरी परम-
ेश्वरी सुनके कर्ता था अमान्यताके ही सुन सुनारामने
पुनः रामे का पुनः पदज सेवक के अन्तमें सुदरने का कहने
परमेश्वरी का पुनः अमान्यता के परमेश्वरी सुदरने का कहने
१०३ में लिखनीय अमान्यता के सुदर लिखने का कहने
उक्त सुनके परमेश्वरी सुदरने का सुदर लिखने का सुदर लिखने
५ लिखने सुदर लिखने सुदर लिखने का सुदर लिखने का सुदर लिखने
लिखने सुदर लिखने सुदर लिखने का सुदर लिखने का सुदर लिखने

पर्वती मानेगी न्यायो पुस्य तो उनका एक वचन मानेगा.

जिन शासनके श्रावण तो जिन मंदिर, जिन मदिना तरे बनवाने है, और जिन तरे पुजने है, और जिन चार निद्रेष मानने है, जिन तरे व्यवस्था मानने है, जिन तरे व्यपन सुक्त्योंको उभाव धरक लावे है, सो पर्वीका संख्यानमान करते है.

पृष्ठ ७६ में मेलिपती है कि "वृषार गुप्त्यों ज्ञानेयानि जेगी अर्थानि वृद्धे वजाने है इत्यादि" उक्त-व्यपन-संख्यान-संखन १७/२७ में व्यपनमन्त्रे काज कगया उ-
के सुन्दे उपर जिननेही उभाव सुन्दे भाषरने मरे
रे उभाव एमे मे जेमे जिननेक वमार, देर, मरे,
गी, नार किमे उमे कितने : सो एमे व्यपनमन्त्रे
मे व्यपिक मदिना है इ नया व्यपनमन्त्रे सुन्दे
मे व्यपनकी लकमीमे एमे कगया सो एमे को
कीव रणता बनाइए व्यपनकी व्यपने वापटादेके सुन्देको
जना मरने है सो एमे व्यपनमन्त्रे सुन्देको नया व्यपिक
मदिना है इ नया सुन्दे सुन्देके ज्ञाने काजे जी मे व्यप-
नमान लकमीमे ही बनाए विवेमे एमे काजे हजाने काजे
को बनाए : सोप काजे का मरने है नया व्यपनमन्त्रे म
सुन्दे सुन्देमे नर सुन्दे लीनेकी का जी मरने सो व्यपन
मान और सुन्देको ही बनाए हीमे एमे काजे को व्यप
कीव काजे का मरने है नर को विद्या जेनेकाजे सुन्दे
काजे कता काजे मदिना है : सो मर जेनेके विद्या
काजे सुन्दे मरने मदिनाके विद्या काजे को बनाए. सो
काजे सुन्दे मरने "वृद्धे उभाव पर्वीका काजेके काजे"

...के ...
 ...के ...
 ...के ...
 ...के ...
 ...के ...

परिणत हमको उन मानेवालों को समझना मान्य मानते हैं।

उत्तरायण के महा मठियों! मरते पागे मजे पाएनेमें संसार खाता मानते हो तो जीते दुंदुहकोंके योगे वाजे नजवानेमें तुमारे-संगारता खाता कहां नष्टहो जाता है कि तुम इस वगत नहीं नजवाते हो. देमो उन दुंदुहकोही मठना! जीते दुंदुहक आगेता वाजे नहीं नजवाते है और मरे हुए दुंदुहकके आगे वाजे नजवाते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोगाजे गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुगसे कहते है हम तो जावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वनजाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार खाता कहते हो उसमे असल बात तो यह है कि तुम करतेतो ही अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसे और जिनप्रतिमा के छेपसे मृपावाद बोलके संसारका खाता कहते हो. हमारे तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्सवसे नगरमे लावना, इसमें जिनधर्मके प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है " ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है " यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुख आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ

नारायणजीने पूर्व जन्मका पापके प्रभावमें सुखत्याग पायी
 शंभु लोनीथी, जब जिन मन के शास्त्रोंमें सुख पायी विरह
 जानी तब गोलनेगी, दुःखगर्भोंकी जो सुख पायी उनकाते
 में तो उनहोंने दुःखगर्भोंके फलमें निहालने है और सुखी
 होने है, और जो सुख बांधा जाता है सो गाय, बैल, घोड़े
 प्रमुख पशुओंका बांधा जाता है परंतु नया सुख सो सुख
 नहीं बांध सकते हैं, पारसी लिखती है कि " सुख बांधके
 फलमें राजा को कोट धरमा पाया जाता है, सब काम क-
 रना प्रति दुःख है, सबका नहीं कर सकता है " दुःख इ-
 म जन्ममें तो जो बौद्ध नाम कथाके जैन एक राजा कथाके
 फलमें निगतां है महाभारत में मदनकी शोभनी कथाके फलमा
 काम करना प्रति दुःख है, फलमा कामकीको कोटही कर
 सकता है, सब काम नया पायी बांधके, पारसी जैन फलमा
 करना सोने करिगे है क्योंकि महा सुख बांधके दिवना
 निजाउतने गति है सो फल पाये करने नया ही है
 और सुखपायी बांधनी बौद्धके कथाके निगती है सो नया
 इस समय फलमें प्रति सोने सुख बांधे निगती निगने
 है सो नया सुखी जो नया नया नया नया नया नया है ?
 जानने है.

पूर्व पाप में बांधनी लिखती है " जो नया सुखपायी-
 न निगने है सो नया सुखपायी नया नया है. " सुख-
 बांधके फलमें निगतां सो फल निगने है सो फल निगने
 क्योंकि नया सुखपायी नया सुखपायी ही नया निगने
 है, निगतां नया सुखपायी निगने नया नया नया नया
 नया नया नया नया नया नया नया नया नया नया है,
 नया नया नया नया नया नया नया नया नया नया नया

वजवाते है परंतु हमधर्म तो नहि मानते है.” उत्तर-जब आरासिंहादि हुंढकोके मुरदे आगे वाजे वजवाते है जंकर नि नमे तुमारे गुरुयाँकी महिमा नही तो क्या तुमारे श्रावकों पुत्र पुत्रीका विवाह मुकलावा हो रहाथा कि जिस. वासं वाजे वजवाते है ?

पूर्वपक्ष—हमतो उन वाजेगाजों को संसारका खाता मानते है.

उत्तरपक्ष—हे मुग्ध मतियो! मुरदे आगे वाजे वजवाते नमें संसार खाता मानते हो तो जीते हुंढकाँके आगे वाजे वजवानेमें तुमारे संसारका खातां कहां नष्टहो जाता हैकि तुम इस वखत नहीं वजवाते हो. देखो इन हुंढकोकी मढता! जीते हुंढक आगेतो वाजे नहीं वजवाते है और मरे हुए हुंढकके आगे वाजे वजवाते है ! द्रव्य निक्षेपे के उपर दोशाले गेरते है उकायकी हिंसा करते है और मुखसँ कहते है हम तो ज्ञावनिक्षेप मानते है. उनके शरीरकी महिमा करते हो और जिनराजकी स्थापनाकी महिमामे पाप वतलाते हो यह मतांधपणा नहीं तो क्या है ? तुम जो संसार खाता कहते हो उसमे असल बात तो यह हैकि तुम करतेतो हो अपने मरे हुए गुरुके वास्ते परंतु मिथ्यात्व के उदयसँ और जिनप्रतिमा के छेपसँ मृपावाद बोलके संसारका खाता कहते हो. हमार तो श्रीव्यवहार सूत्रकी ज्ञाप्य वृत्तिमे लिखा है कि गुरोंको वमे उत्तमवमें नगरमें लावना, इसमे जिनधर्मकी प्रजावना होती है.

पृष्ठ ८८ में पार्वती लिखती है “ ये मुख खोलके बोलना प्रधान रखते है ” यह लेख जूठी गप्पका है, क्योंकि हमतो मुग्ध आगे यत्र करके बोलना प्रधान रखते है. आ-

प्रायःमर्जीने पूर्ण जन्मदा पापके मन्नावर्गे मुखसागे पाटी
 अथ लोनीधी, जय मन वन के शास्त्रीने मुर पाटी निम्न
 आनी नव गोल्लोगी, दुमगांयांकी जो मुर पाटी नमने
 : गो उनहीनी कुमुल्योके फंदेमें निवालेने है और एधी
 गेने है. और जो मुर सांवा जाता है गो गाय, बैल, घोने
 मय पशुयोला सांवा जाता है परंन नदा पुण्य गो सुंद
 इहाँ सांवा मुरने है. पाटीनी लिखनी है कि " मुर सांधके
 फंदेनेवाला गो कोइ इस्मा पाया जाता है, एउ चाप क-
 ला अति दुख है. सुकेक मही मर नरना है. " मुनर
 त कथनमेवो जो कोइ नाक कनाये और मरु काना काने
 और निमको न मरुपको माननी कोनी एधीके फंदा
 मय फरना अति दुख है. ऐसा कथनोको कोइही कर
 वकना है. मुर अगे मदा पाटी सांधके फंदेना और एसा
 कना कोइ मरिगे है. यहीके मदा मुर सांधके फंदेना
 जिनाइते अतिव है. गो मुर गाले करने मुर ही है.
 और मुरपाटी सांधनी पीजानके मने लिखनी है गो एसा
 मय मय मने अति मोहीनी मुर सांधे जिनाली लिखने
 है गो एसा उनको कोइ दिन मने मय नही मानने है
 मानने है.

पुत्र एउ के पाटीनी लिखनी है " जो एउ फंदेनावली-
 ने लिखा है गो एउ नमना मरली नही है. " सुख-
 योमको मरुपको जो एउ लिखा है गो एउ लिखा
 योमके मय मरुपके मने कथनोको जो मय लिख
 है. जिनाली मरुपको मय लिखा है. जो एउ लिखा
 मने मय मने मरुपको मने मने लिखा लिखा है.
 पाटीनी लिखनी है " मरुपके मने है एसा मने

कागनेने निग्या हे निग्या हो मःअन्वना तमें ज्वा लनगी है नगनमे कनवा हे।। "निःसी लो पय तः। गीरी है कि पाहाश गिर पमेना तो मे चुग हो थान लेउंगी" ऐमे यह पार्वती जी दुंढक मयके थानने नामो चुग कर्ती है और महामनियोके रने जायींको गुण उहगनी है। हय पू उते है कि वत्तीग मुनामें किमी जमे ऐगा लेग है। कि "अविरती गुणठाणेवाला परस्त्रीमे व्यभिचार नहीं कर्ता है और परस्त्री सेवनेवालेको सम्यक्त नहीं माना है" ऐमा पाठ तो सुत्रोमें नहीं है, तो फेर मदांय होकर तैने आवश्यकके लेखको कमे जुग उहराया !

विचार कर ! के जंतुआदि नगरोंमें तेरी दृष्टीमे दृष्टी लगाके तेरा व्याख्यान सुननेवाले मुख्य दुंढक श्रावकथे सो वमे व्यभिचारी मुनानेमें आए है. जववे तेरेको वंदना कर तेथे तव तुं कहतीथी "श्रावकजी दया पालो." उन विच रोने क्या जाने कितनी परस्त्रीयो और वेड्यायोकी अं सन्मुखिम जीवोंकी दया पाली होवेगी. इसतरे. तेरे मुख श्रावक तो पांचमे गुणठाणे चाहो कैसाही कुकर्म करे अं श्री जगवंतका जक्त, अविरती सम्यग दृष्टी गुणठाणेवाले सखकीको परस्त्री सेवनेसे तुने पूर्वधर आचार्योका कथ जुग उहराया सो कैसि मर्खताकी बात है ?

इस सखकीकी उत्पत्ति ठाणांगके नवमे ठाणेमे कहं है और मूल पाठमे मोक्ष जानेवाला कहा है परंतु. मतांध को शास्त्रनी नहीं दीखता है. एह पार्वती उम सखकीको प्रतिमा पूजनेवाला वांचके उसकी वहत निंदा लिखती है परंतु जेकर सो सखकी-मतसे गुदा, मुहपत्ती, जाली, पळे उर सीर धोनेवाले, सन्मुखिम पथी मुह वंयोका जक्तथा,

यौन विनमन मनिमका निदकथा, ऐसा जेप होना तो वि-
मनीं बांनके पावनीका नैम नैम कपिन होना यौन निद्रा
न करती परंतु क्या को विनागी ! ऐसा जेप तो जैम
शास्त्रमें है नहीं.

एन गणदीरिहामें जो पद्मावली कुशली लिंगी है.
तो मयें कुशुलीकी मयें लिंगी है मयें कि चार मयें वर्षके
पर्वतकी एन पद्मावलीको निरत नहि है यौन जो जो नाम
पद्मावलीमें लिखा है तिनमेंमें किमीने कोइ प्रेय नचा हुआ
होए तो लिखलाउ, तिनमें एन नामकी मनीन मयें नहीं
तो लिखत नाम धारक. तिनमेंमें तो पद्मावली मयी नहीं
तो मयी है.

एन गणदीरिहामें जो जेप है कुममें जो जैम प्रेया-
नकार धर है तो तो मयें है यौन जो एनमें मनीन कल्प
नामें लिखा है तो एनकी मयागानक है एनके मयको कल
लिखनेको मयागानका नहीं है.

अथ गणदीरिहाके दुसरे नामकी श्रीमतीनी
माया लिखने है.

- १ १७ १०० में एन मयेंमें मयेंनीन नाम मयाग
के लिंगी है तो मय.
- २ १७ १०० में मयाग के मयें जयेंचरे मया नि
ली मय.
- ३ १७ १०० में मयागकी मयेंनीन कुशुली एन
मयें मयें लिखा है तो मय.
- ४ १७ १०० में मयागकी मयेंनीन कुशुली एन
मयें मयें लिखा है तो मय.



कर्मणा जिम्मा है नो गण्य.

२१. माहात्म्यमण्डले में दो लोमम्बका ध्यान करणा जिम्मा है मां गण्य.

अर्थात्क बहुत गण्य जिम्मा है परन्तु हमने यह देखे । दोनके भयमें यह उपर जिम्मा है २१. गण्य जन्म विषयको बहुत होनेके लिये जिम्मा है. नो देय लेनी. न ये २१. गण्य नहीं होनेको बर्जीग मृत्युमें जिम्मा जिम्मा कि पाठमें जिम्मा होनेको पाठ दिग्वाचो--जेकर नहीं जाने नो करदोकि हमारा पंथही पिप्यवान् मुक्तक है २- १ नूठ धोत्रन लोम जिम्मामें क्या दोष है ?

पूर्वपक्ष--इस पारसी दंडवर्णीने पंजी पंजी गण्य जिम्मा नो गया हमके पन्नाका का नहीं है !

उत्तर--इसके लिये उन्में नो पंजाही मान्य होनाई. पूर्व-ज्ञानहीपितामें पंजा जिम्मा हैकि "लम्बका लम्ब-पुमान न होने-मातादिवासी जात लच्छी न होने. लम्बा न होना न होने. लम्बका बहुत लोम न होने, बहुत न होने, मान्यता न होने, योगेता का जिम्मा आजा-न होने, हमारे दोहा देनेको द्रव्य निर्दोष." यहवाता जिम्मा लोममें देवा नहीं ?

उत्तर--यह उपर जिम्मा है जाना बर्जीग मृत्युके न पाठमें नो लोमनी जमे नहीं है. और जिम्मा पञ्चानमें है । हम सुद्वेषीके मरणा नहीं है.

द्वेष--मृत्युमें नो नहीं है हमें लच्छीमें नो है !

उत्तर--जन्म मृत्युके विचार करीके नो हमने नू नहीं नहीं मां कपन लच्छीमें कर्त्तव्ये आया है यह नो विन्वाही १२ देते देते लोम लोम हुआ.

प्पचूयस्सः जलजञ्चस्थलजञ्च जल
 स्थलजं जलजं पद्मादि स्थलजंविचकि
 लादि चास्वरं देदीप्यमानं प्रचूतमतिप्र
 चुरःततःकर्मधारयः चास्वरञ्चतत् प्रचूतं
 च चास्वरप्रचूतं जलजस्थलजंचतत् चा
 स्वर प्रचूतंच जलजस्थलज चास्वर प्र
 चूतं तस्य पुनःकथंचूतस्येत्याह—वेएठग
 इस्सः वृन्तेनाधोवर्तिनातिष्ठत्येवंशिलंवृ
 न्तस्थाथितस्य वृन्तस्थाथिनः वृन्तमधो
 चागे उपरि पत्राणीत्येवं स्थानशीलमस्ये
 त्यर्थः दसध्वस्स दशानामर्ध पञ्चवर्ण
 म्येतिचावः (इत्वं चूतस्य कुसुमजातस्य
 वर्णं वर्षतेत्यर्थः)

नापाः— गजके नांश्च उपशांत करो, करके जलम्भ
 के चपत्र हूण फल, जल के उत्पन्न हूण कमलादि औ
 स्थानके उत्पन्न हूण विचिकित्तादि अर्थात् जाइ जइ इ
 मारिद पांच वर्णोंके फुलकी गानु (गोमे) प्रमाण वा
 क्को अर्थात्क मुग्ध्यान्न देवने अपने अनियोगिक नाक
 देवता वाजादी तत्र वा अनियोगीक देवता गह आइ
 वृत्त हूण इत्येवमुक्ता द्वाया श्रीग वैक्रिय कश्चि करके ज

श्रीसन्मन्त्रोत्तर स्वाधी विगतमानये नदां प्रागे वृद्धाया नम-
 स्कार करके मृद्वियाज देवकी त्याजा मन्त्रि मयं ब्रह्मकाव
 आदि करके पुष्प वर्षावने योग्य बहल कर, बहल करके
 मयं योगिन ममाणु मंरुजके विच उपर लिपे हए बलस्थ-
 लहं उन्मत्त इष्ट धनवर्णिके पत्नींती जानु ममाण वृष्टि
 करी. यदां पुष्पवर्षावने योग्य बहल विकृत्यां हे मित्त पुष्प
 नदीं विकृत्ये हे. यह करन श्री गजपतीय मृत्ये हे नो
 दिनेनर पुष्पोंन देव लेना.

यदि पावनीं नपनीं हे वि सावन पुष्पेण बहल
 नदि विकृत्यां हे मित्त वैदिक मय बहल विकृत्यां हे इम
 पाप्मे मधिन नदीं. इम नदीं सावन इमती गजपती
 य मृत्ये नो पुष्पों के बहलगत पात्र हे मी लिपे हे
 मित्त नदीं नदीं नदीं नदीं नदीं हे वि सावनका क-
 मन मय हे वि मय हे तथाय तथायः

पुष्प बहलान् विकृत्यन्ति ॥ टीका ॥
 पुष्पवृष्टि योग्यानि बार्दलकानि पुष्प व
 पुष्कान् मेघान् विकृत्यन्तीति भावः ॥

इम पावनां भावार्थ इम पुष्पे मित्त भावः. तद गुरु
 पुष्पेणो विनाय वचना बार्दल वि मृत्येण मय-उ न-
 मय-उ नदीं इमए हए मयपी मृद्वियां मित्त हे उमयो ले-
 नदीं यो मधिन पुष्प मीना मी यो इयानां मित्तका मय
 हे. मय पुष्पेणो भाव मी नदीं हे.

पुष्पवृष्टि . यदां नो मृत्ये पात्र मृद्विया मधिन नदीं
 हे मी मित्त हे मय मयपी हे मयपी मयः हए मय
 मीमयते मित्तके हे वि मय मय मी मयदेवी हे मय

अपिय-जमिञ्जवोअणंतो तुहआणा ।
 हिएहिंजीवेहिं । पुण जमियवो तेहिं जे
 नंगीकया आणा ॥१॥

अस्यार्थः—हे जगवन् जिनप्राणीयोंने तेरी आज्ञा
 राधन करी है वे प्राणी इस संसारमें अनन्ते ज्वरुले
 फेरनी जिनप्राणीयोंने हे जगवन् तेरी आज्ञा अंगी
 नहीं करी है वे प्राणी इस संसारमे रुलेंगे।

तथाच—

जो न कुणइ तुहआणं, सो आणं कुण
 तिहुअणजणस्स । जोपुणकुणइ जिणाणं
 तस्साणा तिहुणेचेव ॥३॥

अस्यार्थः—हे जगवान् जो माणस तेरी आज्ञा न
 करता है तिन पुरुषोंको तिन लोककी आणा करनी प
 है. और जो पुरुष जिनेश्वर जगवानकी आणा अंगीका
 करे है उस पुरुषकी आणा तीनलोक मानते है. क्योंकि
 आखीरमे जगवानकी आणा अंगीकार करनेसे वंही प
 दकी प्राप्ति होगी, तब उस पुरुषकी आणाती तीन लोक
 अंगीकार करेगे यहनिःसंदेह जाणना. इस वास्ते जो
 जो जगवानने कथन करा है सांसो सर्वही प्राणीयोंमें
 अंगीकार करनी चाहिये.

और यह जो कितनेक मानते है कि “जगवन्की प
 जायें केवल हिमाही होती है” वो उनलोकोंकी समझमें
 फरक है—

। जगवान् ऐसा उपदेशाती नहीं देने, उस धामने मनमें
 नाशों शंका जो जगवान् पढ़ावाजन कथन कन है ना
 व करके मानना चाहीण, यीर रुदायिन शंका एम जावे
 । यह महाराजके पुण्ये न्याय्य गुनामा काना चाहीण,
 कनु ऐसे नहीं कर्नाकि जो म्याधीजीने कृपा सब वा सुठ
 एणने लुप करणए, नयोति निगदी टोके जवनक म्या-
 लका न्याय्य निर्णय नहीं करेय नय नय खान्नाका क-
 थाण होना उखन हे.

पुर्वक—पार्लोने जिगा हेति खपने क्षेत्रमें माप
 पाथी जिग क्षेत्रों विहार को उन क्षेत्रके श्रावकोंको
 निती प्रादिकमें महर देवे के लपके साथ तथा म्यामती-
 नीने समक दिन गुहाके क्षेत्रों विहार यानी पहुंचनेकी
 थना करी है, ज्यो एमहा जय साथ तथा मागी खपने
 क्षेत्रमें निर क्षेत्रमें यानि म्योरो जो उन क्षेत्रमने
 म्यामकोंको महर देवे, एसाके मय यह कथन यचीम पा-
 र्थमें ही है नहीं म्योरे एमने जिगा हे जो कदांमि न्याह
 लित्या हे ।

अनरु—यह साथ ही उन जिगनेवाजीकीने पूजा
 सिने नहामि यह सन म्याह है ।

पुर्वक—जो जीने के यह कथन यचीम सुबसे जो नरो
 है वरु, जगिके निधिग ही म्यतो बुद्धिमें नरुवीष्ट

अनरु—जो कथन यचामे म्याने म्याममें म्यो जो म-
 क्कन्यामें लिखना यह निर्णयों मागीका म्याह है, एम एम
 एमके ही है म्यो म्याम म्यामके म्याम म्यामके म्यो म्यो
 म्यो है म्याह म्याम म्याम जिगने है, ज्यो म्यामके म्यो
 जिगने म्यामके म्याह म्याम म्यो है म्यो म्याम म्यो

दर्शन करने समुल्य प्राप्त होना है, और यहाँमें
 का शक्ति और ज्ञान (आध्यात्मिक) में सादृश्य शक्ति दर्शन
 श्रीनन्द, पद्मराज श्री देवनागरी स्वामीके दर्शन क
 गुरु हैं, भुष्मा, मांस्वी, लीपनी, बदनाम शक्ति और
 जीमें मिलानकर मुदा संतोकावापने जीभानकर, लक्षण
 अन्य विषयों कायं गिने अंदाजमें करीब चार हजार
 हैं, और कहते हैं कि स्वामी इन वादका विचार, दो
 कर करीब स्वयमेव है धन्य है धर्मका काममें पैसा
 चनेतापने मुदा आवश्यकता, एकमें पैसा मिलाने नीनी प्रया
 है, इस इन वादकों ज्ञानरमानी गिनके धन्यवाद देने है
 एकमें काममें किन्ति नहीं है किन्तु पैसोंके पुन्यके का
 गणनेमें कीजिये है, पैसा बदनाम करने नहीं है परंतु
 कि ज्ञानरमानी नहीं है."

यह उपर्युक्त ज्ञान वाचक मुदा धन्यको विचार क-
 ना शक्ति कि ज्ञानवान तथा दिनमलिषा और तीन वि-
 की ज्ञान ज्ञानको तथा दर्शनको ना बनाइ करनी और
 काममें ज्ञानके विषय ज्ञानकी यह कैसा ज्ञानकी पु-
 न्यका ज्ञान है, और ज्ञान में ज्ञान करनी कि "सादृ-
 श्यके नहीं करवाते है" ना ज्ञान स्वयं ज्ञान वापने यह
 ज्ञानका ज्ञान ज्ञान बनाइ बने नहीं करनी। ज्ञानमें यह
 ज्ञान ज्ञान है कि "ज्ञानमें ज्ञानमें ज्ञान वापने ज्ञान ज्ञान
 ज्ञान, यह ना बनाइ करनी यह ज्ञानका ज्ञान ज्ञान
 ज्ञान, ज्ञान ज्ञान ना यह ज्ञान ज्ञान के ज्ञान वापने ज्ञान
 ज्ञान ज्ञानका " ज्ञानमें ज्ञान ज्ञान को ज्ञानका ज्ञान
 ज्ञान ज्ञान, और ज्ञान के ज्ञान ज्ञानके "ज्ञान वापने ज्ञान
 ज्ञान ज्ञान ना बनाइ करनी यह है" ना ज्ञानके ज्ञान ज्ञान

उत्तरपक्ष—यह क्रिया करनेवालेकों जो फलकी प्राप्ति होती है सो नीच लिखे हुए दृष्टांतोंसे जान लेवे. तथाहि:

१ श्री जिन प्रतिमाजीकी भक्ति करनेसे श्री शांतिनाथजीके जावने तीर्थकर गोत्र बांधा यह कथन श्री प्रथमानुयोगमें है.

२ श्री जिन प्रतिमाजीकी पूजा करनेसे सम्यक्त शुद्ध होता है यह कथन श्री आचारांगजी सूत्रकी निर्युक्तिमें है.

३ “थड्थुड मंगलं” अर्थात् स्थापनाकी स्तुति करनेसे जीव सुलभबोधि होता है. यह कथन श्री उत्तराध्ययनमें है.

४ जिन भक्ति करनेसे जीव तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन श्री ज्ञातासूत्रमें है.

५ जिन प्रतिमाकी पुष्पकी पूजासे संसार दूय होजाता है. यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

६ सर्व लोकमें जितनी अरिहंतकी प्रतिमा है उनका कायोत्सर्ग साधु और श्रावक दोनोंही बोधबोजके लानके वास्ते करे यह कथन श्री आवश्यक सूत्रमें है.

७ श्री जिनेश्वर जगवानका मंदीर बनावनेवाला वाग्मे देवलोकतक जाये यह कथन श्री महानिशीथ सूत्रमें है.

८ श्रेणिकराजाने जिन प्रतिमाके ध्यानमें तीर्थकर गोत्र बांधा यह कथन श्री योग शास्त्रमें है.

९ श्री गुणवर्म राजाके मतवा १७ पुत्रोंने मतवा प्रसारमें एक एक प्रकारमें जिनेश्वर जगवानकी पूजा की है, और उग्रमें उगी तरमें मोक्ष प्राप्त हुए हैं. यह कथन

मन्मथ मन्मथकी पूजाके चरित्रमें है।
श्रीराम मन्मथ मन्मथकी पूजा श्री राममन्मथ मन्मथमें क-
थन करी है।

द्वारिक्य अनेक ज्ञानमें श्री जिन प्रतिमा पत्रनेका
गदा कल्प कह्य है सो सुद्ध पुमाने देख लेना।

पूर्वक—उद्ध नामोंमें ऐसा कला कला है तो
जिन नामोंमें विशेषमें देह को कलेने हीन देवताउने जो पूजा
करी सो उनोंका नीत है और हीनवि विशेषमें पूजा करी
सो मंगल मान करी तो क्या इन मन्मथोंको सुद्धता पर-
जयना करनी है?

उत्तरक—जो परमवक्ता कर सोने सो जैमें जाय
वैमें परों सोना उद्धक विचार लेले लोकोंको फेर
तो क्यों नैरे !

पूर्वक—परम सोना जायने किमें निश्च कल है

उत्तरक—जुमने शास्त्रजान इन लोकोंका क
ला निश्च करी है, क्योंकि एव लोक मंगल मान
ने नामों है परम मंगल मान करनेवालेको क्या
मन्मथोंकी पूजाके कल तो सोनादि करी है सो
पार्थिव, और मन्मथकी मन्मथ जगजान श्री मन्मथ
लेने करी है कि पूजाका पत्र-

हियाण, सुहाण, म्यमाण, निमेयमाण
अणुणामिलाण, जविम्मण्ड ॥

प. ५५ किन किन पत्रनेका पत्र प
पत्रने, मन्मथकी मन्मथ, मन्मथकी मन्मथ, मन्मथ
मन्मथकी मन्मथी मन्मथी मन्मथी है।

अब मुझजनोंको विचारना चाहिए कि ऐसों ऐसों प्रसक्त शास्त्रोंके पाठ जो न माने और जोले जीवोंको फंदमें फसावे उनसे ज्यादा और नारे कर्मी जीव कौन है? अवन्नव्य प्राणीयोंको हम अपने मनमें करुणा ल्याकर हित शिक्षारूपो दो बातों लिखते है कि तुम पक्षपात ठोमके यह हमारा लेख और तुमारी गुरणी तथा गुरुओंका कथन दोनोंही शास्त्रोंके साथ मिलावो और सखासत्यका निर्णय करो क्योंकि इस मनुष्य जन्मका सार एहीहै कि जितना अपनेसे बने उतना धर्म करना पक्षपातमें पमकर क्या ले जावोंगे. इस वास्ते पक्षपात ठोमकर सखासत्यका निर्णय करो जिससे यह मनुष्य जन्म फलीभूत होवे. नहीं तो जैसे आये वैसेही कर्मबंधन करके चले जावोंगे.

इस पार्वतीने जो २१ इक्कीस प्रकारके पाणी आचारंग सूत्रके अनुसार लिखे है सोजी जुठे और स्वकपोळ कल्पित लिखे है. क्योंकि आचारांग सूत्रमेंतो नीचे मजिब लिखे है—

- पीडोका धोवण १ अरणीका धोवण २ चावलोंका धोवण ३ तिलोंका धोवण ४ तुसका धोवण ५ जवोंका धोवण ६ ओसामण ७ आनलि (कांजी) ८ उप्न पाणी (गर्म पाणी) ९ आंवका धोवण १० अंवाम्कका धोवण ११ कवडका धोवण १२ विजोरेका धोवण १३ द्राक्षका धोवण १४ दामिम (अनार)का धोवण १५ सजुरका धोवण १६ श्रोफळका धोवण १७ कैरका धोवण १८ वेरका धोवण १९ आवन्नका धोवण २० आं अंबलीका धोवण २१ एत उमीम प्रकारके पाणी श्री आचारांग सूत्रमें लिखे है— आंग पार्वती दृग दहि के नामेका धोवण जिपा

मैं गंधकर रूपों मिलीं कि चम्पल होती है कि क-
नहीं पत्त बिजारी माझोंकों तथा पूर्वपर विगरे जा-
वींको तू न बोलकर अलोक जगाके कौन कौनसी गति-
जानगी !

तथा यावनी अपनी योग्यमें लिखती है कि " जिनों
द्वेषण आदिके अर्थ को है तथा नये आदिककी धारें
न है तथा अंगनमें शहरकंदि आदिककी जालमें दाबते
मृतकों नदरकेत्यों तपे लालके गुने फूलकी तरह
मके अंगमें दाबदाबके धीमा सेगे है. यौन विनोते करले,
जो यौन शायनको सुगन्धता जगाके अरु जगात है तथा
दि नाजक आदिकी शक्तिआदि अन्तर में है उनको न
जानी जानिए महाकायवत आरके विकल्पमें उंच नमरे
अंगमें मृतके तपमें दाब जगाके मर देते है." उक्त को जगमें
को जो अंगन आदिके अर्थ करके है. यद्यपि वेगण संयते
है, जगनी करके है. निजामे शहरकंदीको जालमें दाबते है
अथवा कंदुवाग संयते है, अथवा अर्थों तपमें यौन शायन
में अरु विगरे फल मरती है. वे मरु मरके नरकोमें शक्तिमें
मरता विनोते करले, मरती यौन शायनको सुगन्धता ज-
गामे अरु जगात है जो नमरे जगमें तथा कंदु गाहन आ-
दिकी शक्तिआदि अरु नाज को लेवेनी मरके नमरेमें जगमें,
मरु मरु शक्तिमें अथवा शक्ति लिखा है यद्यपि यौन शायन
अरु दाबे अथवा मरुमें ही मरती है. यौन यद्यपि अंगमें
अथवा काम शक्तिमें अथवा मरुमें ही अथवा शक्तिमें
को शक्ति मरुके शक्तिमें अरु को है परंतु अंगमें मरुके
अथवा अंगमें अंगमें मरुमें ही अंगमें अथवा अरु अंगमें
अथवा अंगमें, अथवा, अंगमें, अंगमें, अंगमें, अंगमें, अ-

चाल, आलु प्रमुख रांधते और खाते है. आचारजी मे है, और खाते है. यहतो होनाही असंभव है कि कों आदिककों लूण लगाके धूप लगानेमें अधिक पाप है. अग्रि उपर रांधने भुर्था करनेमें अल्प पाप है. और हं साधु साध्वीजी वैगण, कंदमूल आचारादि खाते हैं, प तीके लिखने मुजिव जे कर इनकी परलोकमें ऐसी गति वेगी तब तो एह विचारे बहुत वेदना जोगेने. यहतो हं नहीं सकता हैकि मांसके रांधनेवाले तलनेवाले और भं सेकनेवालेतो नरक जावेंगे और खानेवाले नहीं जावेंगे. अग्रि जैनमतके शास्त्रोंमें वैगण, कंदमूल मदिरा मांसादि वाचीश, अन्नक्षय वस्तु है अर्थात् खाने योग्य नहीं है, लिखा है. परंतु वैगण, होलां, सिंघारु, कंदमूल, शक दी, मुली, गाजर, करेले आदि पूर्वोक्त रीतीमें खावें रकमें जावे ऐसा नहीं लिखा है. इस वास्ते श्रीमती प हुंढकणीकों अपने माने वत्तीस शास्त्रोंके मुळपाठमें प ज्ञानदीपिकाका लेख लिखलाना चाहिए. नहींतो सुर्वी लिखनेका दंभ लेना चाहिये.

तथा इस पार्वतीने जो अपनी पट्टावली लिखी नी स्वकपोल कल्पित लिखी है क्योंकि श्री नंदीजी सत्तावीसमे पाठ उपर देवाधि गणिक्रमा श्रमण लि और उनमें पहिले उब्बीश आचार्योंके नामजी लि अग्रमिह हुंढकके परुदाद गुरु अमोलकचंद्र हुंढकने व टाथकी लिगी हुंढकपट्टावलीमें जो देवाधि गणिक्रमाः तक्रमनाइम पाठके नाम लिगे है तिनमेंमें कितनेही नाम नंदीमुत्रके पाठोंमें विरुद्ध लिगे है. और पार्वती देवाधि गणिक्रमाश्रमण तक सत्ताइस पाठ लिगे है ।

२५ हेमवंत
२६ आर्यनाग
२७ देवंगणिसूरि

यहन्नी पट्टावली जैसी अमा
लकचंद दुंडकके हाथकी
लिखी हुई है वसीही हमने
लिखदी है.

२५ गेहगणस्वामी
२६ त्रिपगणस्वामी
२७ देवच्छी कृमासमन

यह नाम जैसे पार्वतीने अ-
पनी बनाइ ज्ञानदीपिकामें
लिखे है वैसेही हमने यहां
लिखदीए है.

अब पाठकजनो ! तुम विचार करो के ये लौंके, और
अमोलकचंद दुंडक, और पार्वती दुंडकणी ये कैसे मृपा
वादी और मृपा लिखनेवाले हैकि जिनोकां नंदीमूत्रमें
विरुद्ध लिखतां नर नही आया है, और अमोलकचंदको
लौंकेसे, और पार्वतीको लौंके और अमोलकचंदसे विरुद्ध
लिखतां नय नही आया है. इस पार्वतीने तो अपने वंश
गुरु अमोलकचंद दुंडककोजी जूठ लिखनेवाला सिद्ध करा
है. बाहरे पार्वती ! तुं ऐसे लक्ष्णोंसे दुंडकोमे ज्ञानवंत बन
रही है. इसकी लिखेली सर्व पट्टावली पूर्वोक्त कारणमें
जूठी है और इस नरतखंरुमें देवाधि गणि कृमाश्रमण
पीठे तिनकी पट्टावलीका लेख जैनमतमें नही है इस वा
स्ते दुंडकोने पीठली पट्टावली जो लिखी है सोची मिथ्या
है. श्री आर्य महागिरिकी पट्ट परंपरायमें देवाधि गणि कृ
माश्रमणजी हुए है, यहां तक उसकी पट्टावली श्री नंदीजी
मूत्रमें है पीठली कोइ ग्रंथमें लिखेलीही नहीं है. और
श्री आर्य मुहास्तिकी पट्ट परंपरायमें जो आचार्य हुए
तिनकी पट्टावलीका स्वरूप श्री जैनतत्त्वादर्शनामा ग्रंथमें

मा मा मलाः समेत न विप्रम प उरिप, तन
 जमा तम री ममामन तया तया तिम मजा मंत्र
 मयमा नाम विप्र

- २० ग्यानर्नमो ही गीमन्त क० उमे किम किम त्तं उ
 मता नाम किम वागो कृमा त्मगी को त्या म्मा क
 रणा चला २०
- २१ उमउगीको कल्प तांनणा ननेर फोमने वाजागत
 करणा
- २२ उमेमे समोमरणा म्पना. उमरा उमा म्पना संमं
 उमको डंड चला हे
- २३ प्रमांजनी म्पने नही वेदकल्पमे चली हे सो हा
 सवय लि०
- २४ दिमा वेठे समोमरणका कथा च० कहां रपणा लि
- २५ दिमा गइ अमुची टालन लगे मुहपती रपनी लि०
- २६ मितमाजी कौंन कौंन अवस्नाकी मानते हो सो लि
- २७ अप थापना नपेपा मानतेहो के नही
- २८ जगवानर्जाका गोमालामे थापना नपेपाहे के नही
 नही तो कयोंकर नहीं जो हे तो अप गोसालेको म
 उर जो थापना नपेपा माने सो समझीष्टी हेके मि
 षीष्टी हे अप कथा जानतहो मत्र लि० पुलासा
- २९ चारकानगरी दाहा हानेकी चली प्रत्माजी मंझज
 कथा कथा हाल चलाहे लि०
- ३० कृश्नजी इंडोरा फिराया दिप्याके वास्ते पृत्त
 वस्ते मंझजीके वास्ते कथा कथा हुकम दिया हे
- ३१ नेदनाथजी म्हाराजने कृश्नजीको कहा है के कृ
 सरिपा होवेगा उस वपत किसने वदना करी हे
 सका नाम

- ७ महानमिन्तर्जाका ५ नदनीसास्को बग्योकर नदी मा-
नने जो माननेहो तो कितना माननेहो जो पृथ्वा-
जागी पुता हो करणे क्या कहाँ न्यानिमीनमे जो
कामनजा शानान्तमे उनका क्या चजन चजाए
- ११ दिनको गिर दहके चरना कितना कितना दिन लग
१७ भाजीने ६ क्तोमे कितना जिपाए पुजाया
- २२ मव पदागेक बाम्भे कपडाके ऊँउ बोल मत चरना
लगवानेही शुद्धी मर्गव पानी कौन मावमंठ कहा जि०
- २२ क्या पानी क्यारु लेणा प्रोचनका २२ यकारमे ले
वनी मकारका चला हे लेणा मो रपो कर नहीं
होने नि०
- २३ पदोनीगी जाम्या मनन० करी के द्या कौमीयोकी पा-
नी जाम्यामे प्रव्याथा रहने पाठमे लि० दंड क-
पनी नहीं कानी जाम्याक राधक हे के विराधक हे
- २५ शहाभीरुको मारु जमजा श्रावक श्रावहां शुभ म-
पका नाम राम राम काम बरवर पवहन व्याधिक
तिथ्या. देवलोक जाणा राधकय गा माय जाणा क्यों
के जय जिने बिना नहीं मानन प्रीतमं मव नि
शोरमंका जि०
- २६ अष्टवर्गीयां यां रानीयाके नाम गनेयाके नाम देम
२२००० हजारके नाम दूट बगलसाका जुदा रुदा
- २७ शहीरुवां मापदेवांही गयो धर्मनाम प्रवृत्ताको लि०
- २८ नमवानेके कथाने बोल बानना बंदमे पुता क-
रने अथ जो पुता कथनेहो के नहीं अगे गिर करार उ०
- ३० पुता १२ मकारमे नि पनी मकार बरौहे कही
- ३२ पुताको लगवानेके मूल मननेहो के कम श्रादा ही

कम जाना माननेवां तो गया गत लिंग है

४१ जगवानजीके दरमण गरिषा मन्माजाका है ते
कम जादा

४२ आपना जगवान जानके लुंउके जेडी लमांणका
कया फल

४३ यागीको ज्ञाग करावे तथा जगनी माने कया फल

४४ जगवानजी एक पेत्रमे २४ जा वज्जे रहेतेने के नही

४५ आँगका मुल पाठ किताणा है टीका कितनी है कि-
सकी करी होइ है आप मव सच माने के नही जो
मानो तां कितने पर्वधारककि है टीका सो जो दम प-
र्वथी जो उनोने किकृत करी हावे उमका मसकर
माने मनावे विना आलोयां विना प्राणित मुं हावें

४६ जो ग्रंथ है सची सख हैं किमके वचन है

४७ जो मंड्र वने है सो किसकी अग्यासे वनहे उन्नउपा
सरेका नही देणा कयोके उपाश्रमेही धर्मध्यान कर-
नेके वास्ते किसीका वनवाना चला नही काइएक
जगाकी ठीक नही जहा रहे उसका नामज्नी उपाश्र
केते है

४८ सत जगा धन परचना कण अगे केसने परचाहे आ-
नंदजी कामदेवजी प्रदेसी राजाजीने कहा खरचाहे

४९ जिसके घर सुतक होवे उसके घरका आहार नही लेना
उसके घरके समायक नही करे कां लिंग

५० मपण मास तुलसकी तरां है लेते होके नही कितने
चीरका लेते ह्यो ठाठ अनठनी सराव सरीपी किसी
जगने लामभीमांसी रोटी राथ पाते हो के नही क्या

मीन चक्षुषस्तु त्वो मे नदीं व्यस्यति दौके नदीं व्य-
 सं श्रायक त्वो पाते दौके नदीं ७२ मीरजपाके नाम
 या तथा काशय कर्मके व्यस्य सर्व तिम्रगा

देवर्षीना पातु मां विष्णुवन्दनीने पुत्रव्यासमयीको
 शशा मी पातु मुत्तर ज्वर खेगीप्राग्ने छोटे नदी
 शैवे ज्वर तिम्र एतव वस्तुं हो

मापहो धनीं इगना कर्मां जला के किना मित्रना
 मराम् जे दुःख जोते फेर गया वरमे हे मोर मेने नदी
 शरणीके रूप मी कर्मने नो जो पूछे हे मो तिम्र

हे नदीनी कर्मके शशा धनीं देवर्षी मया पातु
 हो जगती कर्मके व्याहार मज हो देव मी तथा पातु
 हो जगती कर्मके दुष्प्राप्तीसी नदीनीसी तथा पातु

जो जगतीमे शक्यता संजानीमे मराम् व्यासमयी कान-
 तीके शरणीका मया मया है

पुत्राको शरीर तथा तथा मर्यादा मज्ज किजना पुत्र जो
 नदी देवकी ममप्रधानके शरणीके शरणीके नदी

कोशक्यात कोशका कर्मने छोटे तथा शेषा कोशका मज-
 का शीतली पुत्रा शरणीके कर्मने छोटे व्यास तिम्र दगा
 कर्मने छोटे पुत्राशका मित्रामा के पातु कर्मने शर हे

मीमे हे जोम शरणीके शरणीके मुर्गा मेगा मरता

मीना जीया शरणीके कर्मनीके मज्जामना कर्मा

नदीके शरणीके कर्मने नदी जन्म शरणीके शरणीके पा न
 मराम् देवना मने पाते हे के

शरणीके शरणीके कर्म मया है

जगतीके शरणीके शरणीके शरणी

शरणीके शरणीके शरणीके शरणी

- पानजी कीयां रत्न सोनेकीयां गोत्मजीका जाए
 त्माजीकीतिणे काल लग रहे
- ६६ जो सुरयाव देवताजी पृत्मा पुजीया १०८ सिधां
 विच उन सर्वोका कया नाम हे लवी चोडी रंग उनके
 अग किस किसकी हे
- ६७ जो माणवचेतमें दाडां हे सो किस कीया हे तिय
 करो कीयां तो ४ चार इंद्र ले जात हे सो किसकी
 यां हे सासतीयां हे के असासतीयां हे लवी मोटी लि-
 सब देवलोककीयां लिपणा
- ६८ प्रत्मां बनानेवालेको कया फल
- ६९ प्रत्मांजी मूलवेचणेवालेको कया फल
- ७० मंड्रकीयां इटां ढोनेवालेको गंधेको कया फल
- ७१ मंड्र बनवाने वालेको ? १ देवलोक जाणा कहा लि०
- ७२ मंड्र बनवानेवाले कया फल कहांजावे
- ७३ अपकी पटावली कोनसा हे जिसकी अपकमेंते हो
- ७४ ८४ गठमां किस गठमे हो गठ कामे चले हे
- ७५ सतंवरी रुगंवरीकी प्रत्मा माननीका लि०
- ७६ जगवान चेतन के अचेतन प्रत्मा चेतनके अचेतन
- ७७ नसीतमे चला हे चणे मात्र पृथ्वी हणे ढणावे अण
 मोदेतो मंम जो मंड्र बनवाने वालेको चला जाण
 के नही
- ७८ इस्त्री पृत्माजीका संगटा करे के नही
- ७९ इस्त्री पुजा करे के नही कपडे सहत के रहत
- ८० इस्त्री सनातर वणे के नही
- ८१ इस्त्री ढोलकी उने वजावे के नही जगती के वास्ते
- ८२ तुंगीयाके श्रावग पृत्मा पुजी के नही

- ३ गृह्य वेदनी कमेका कथा अर्थ है
 जैसीजी एमा पुजनके वपन नमदहन के मि-
 ल्या रहन
 यन्तानी नीन प्रकाश्यायां हे मतंवरी ठगंवरी घोहद
 मंतनी कौन मय कौन अमन शिवने विथंकराकीया
 मन्मा रामे एके किलकी पुत्र
 सर्वांगीनी मन्मा सर्वांगी कथां नहां पनाते
 जी ज्यन्मागमर्जी के मथ बुदेरापजादो गृजराराजे
 जेमेमे ११ मी मयहे के लगन हे जो माछ मत्त के
 प्रमद हे तिसके प्रमगारे पानो के नही
 तागतम प्रम गंद्रे के नही अचारंगर्जामि मृगके पुजन-
 वात्रे जागे कथा सोनो कथा लिपा हे
 ४ सीधे न्तावृत्तमे मानक चित्रमे १० पापमे माद वादके
 जन्मपार मानकी राग्या हे के नही
 ५ म्नागारे एगो बुद्धामि पूजा तिसमे हे मयगतमे नही
 त्रि० कथां पुन्याय छापरी मीदी बुलापना देन हो
 एम जामे नही त्रि० म्नागमे नीन पनांरथका
 मन्म त्रि०
 नंतर व लय रंग हे मि कन्ममे कथा रंग हे
 एगामे हे त्रि०गामे हे जोग्यते म्नामे के पागमेमे
 जेवनीनी पनीरहा कथा मन्म पुन्यांजीका कथा
 कन्मेमथीहे १० एमेन मारा ११ का कथा अर्थ
 न्नामे अशुद्ध मन्मेरो के नही
 ए मन्म त्रि०गामी कथा मन्मी हे
 एहे एवना रागी के सुपारज नही मने त्रि०मे
 एहे एवना ए हे ए० एहे हे

ए० सब सूत्रोंका नाम जो अब मानते हो सबका मुलप
टीका सबकी लि०

ए० जो आत्मारामजीने जीवनरामजीको चिठी जेजीए
उसमे लिखा हे के सूत्रमिनुं इतने मिलेहे के गेएनीं
बाहर हे सो गएतीसं बाहर कितने होते हे दस प
मजूद हे एसे फूठ बोलएवालेसे चरचा दखसत
के नही

१०० उसमे लिपा हे के २४०० वरसके मंडू पडे हे २५००
से मंदर उस वपत उस वपत जो जरथजीकीपां
प्रत्माथी सो अज्ञ हे के नही तो क्या सबव हे
१००००००० लाख श्रावग अपने लिपे हे सो जगवा
नजी कितनेथे सो क्या क्या लिपते हे जिसके विचसे
सच्च नकालना मुसकल हे फिर कहते हे फेर कहते हे
के चरचा करो सो क्या बात हे मुगधजनाके जरमाए
करते हे जितना चिर कोइ मिलदा नही जिस
कोइ मिला उस वपत पवर नही ठरो के नही
नाका जवाव इस नही लि० जो तीमीयाके न
हाए नही देए लिपे सूत्राके अनुसार टंणे प्रश्न
सं० १९३० चैत्रमुद्री पंचमी दमपत मोहनलाल
त्मारामजी कौ लेखकका बहु छप हे लीजो चतर
वार अदका उछा जो लिपा मित्रामि डकडं बहु
शति टुंडक प्रश्न समाप्त ॥

येह ऊपर लिपे हुए प्रश्नों फेर जहां इनके उ
लिपेगे वहां स्पष्ट लिपेगे कि जिममें वाचकवर्ग हों व

प्र० ए सुपने उतारणे, घी चमाना, फिर जिलाम कर
और दो तीन रूपैये मण बेचना, सो क्या भग
नका घी कौमा है सो लिखो.

उ० ए स्वप्न उतारणे घी बोलना इत्यादिक धर्मकी प्र-
वना और जिन छव्यकी वृद्धिका हेतु है. धर्मकी
जावना करनेसें प्राणी तीर्थकर गोत्र बांधता है
कथन श्री ज्ञाता सूत्रमें है. और जिन छव्यकी वृ-
करनेवालाजी तीर्थकर गोत्र बांधता है यह कथन
श्री संबोधसत्तरां शास्त्रमें है. और घीके बोलने में
जो घी लिखा है तिसका उत्तर जैसे तुमारे ज्ञान
रांगादि शास्त्र जगवानकी वाणी दो वा न्यार रूपै-
येकां विकनी है ऐसे घीकाजी मोल पमना है.

प्र० १० माला जिलाम करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना क-
रनी, और जगवानजीका जंमारा रगना कहां लिखा.

उ० १० मालोद् घटन करनी, प्रतिमाजीकी स्थापना करनी
वया जगवानजीका जंमारा रगना येह सर्ग कथा
शारदादि शास्त्रमें है.

प्र० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां
उत्तराश्रयणी प्राण क्या जानते हो. और उनका जो
पुण्यत्रोक माघ माघाष्टका वंदना करके जो
पुण्यत्रोक क्या समयके और नहीं हरे तो क्या समय

उ० ११ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां
उत्तराश्रयणी प्राण जाननाहै. उनका जो
पुण्यत्रोक माघ माघाष्टका वंदना करके जो
पुण्यत्रोक क्या समयके और नहीं हरे तो क्या समय

प्र० १२ जो पुण्यत्रोक प्रतिमा पुजते है, माघ कदां
उत्तराश्रयणी प्राण जाननाहै. उनका जो
पुण्यत्रोक माघ माघाष्टका वंदना करके जो
पुण्यत्रोक क्या समयके और नहीं हरे तो क्या समय

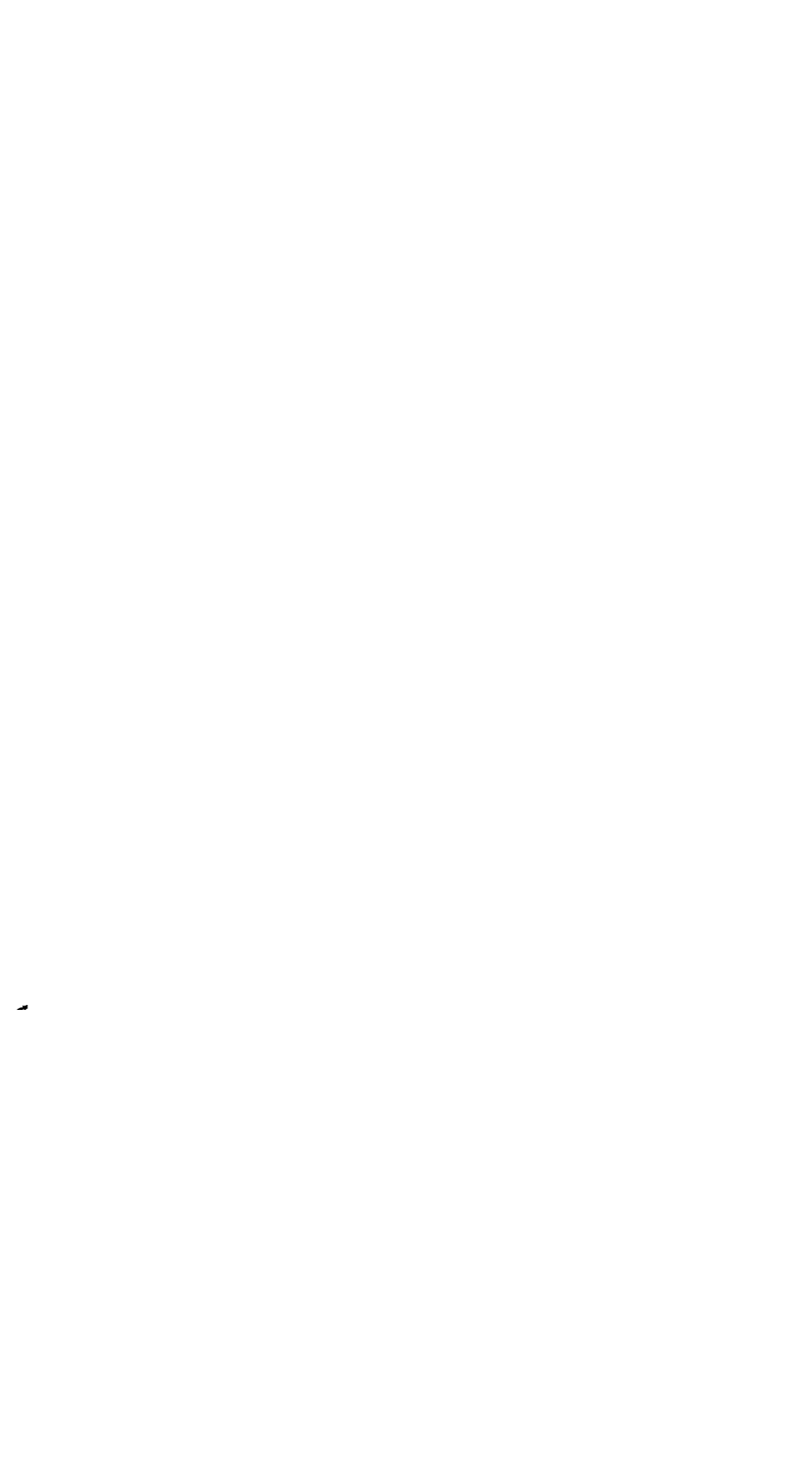
योग प्राप्त करवा दे

३३ उन जिनका नाम एक स्वयंका फलका मूल पाठ
३४ उनके लय यह पुस्तकमें ही नाम लिख पाए हैं.
३५ मनु जिनमें मय रहता है.
३६ मनेगाने नाम मयमें मयेग करना लिखने

जिसे नाम बशीर मनी मयामने जोर
जोने जोगि मयेग कीपले उनका जोगि-
अधोन नाममें है. वर्तमान ती नामगानेके
जो मने मयेग करा है. कल्याण, जोगि जोगि
जा, जालीके जन्मान.
जोग नामना, जोगिका, जोग दीपजोगि
: कया लिखा है
जोगि ज्ञानजोगि श्रावक नामे यह कर
जोगि श्रावके है
जोग मयनजीके. २० पंजीनमे मयमनकी :
७ नामका मय लिखो.

नाम जोगी:

कौशल जिनके, जोके मयमने केवले।
२० जोगे म जोगे, मयमने जोगि जोगि। २०
२१ नामके लिखा है कि मय मयेग, मय,
मयमने मयमने मयमने. जोगि जोगि, जोगि, जोगि,
जोगि जोगि जोगि मयमने मयमने मयमने मयमने
जोगि जोगि जोगि मयमने मयमने मयमने मयमने
जोगि जोगि जोगि मयमने मयमने मयमने मयमने
जोगि जोगि जोगि मयमने मयमने मयमने मयमने



- कराये तब तो हम तुम्हारा भंडार खाता मानेंगे नहीं तो तुम्ही अपने भंडारमें क्या लिख होता है.
- १० २० नमनाथजी महाराजने कुशमीकों जिस वचन कहाया कि हे कुश तुम्ही मममरीखा (मेरे महाराज) होना उम वचन पिउने पंदना करीखी उमका नाम लिखो.
- १० २० उम वचन कुश महाराजकों पंदना करी वा नहीं करी उम मरणी शान्तिमें कुशनी चला नहीं है.
- १० ३० महानिशीधमीका २. पांच वा नवनीतमार छ-वचन बयोकर नहीं मानेहो शौर जो मानेहो तो किमनेमें मानेहो तथा उममें प्रतिमासीकी पूजा करे कराने उमके नामे क्या कहा है महानिशीधमें काउमनावाक्या क्या चलन चला है.
- १० ३० इय मरणीवमार मानने है शौर जो उमने कहा है सो मन है शौर कवलमनावाक्या सोना चलन था सोना नरनीतमारमें लिखा है वसेर शयकों पूजा पर उममें मासमा सोना शक्ति नर मरणी-शीधपुत्र नामने करी हो शौर उममें महानिशीधमा देहो शौर सोना मानेहो तो महानिशीध शान्तिमें उम मरणी पूजाकर चलन है सो कसे मरणी मरणी कसेहो तथा उममें जिस पावनर नामने कसे लिखा जो कि मरणीपुत्रका नाम है शौर उम नाम है सोना पूजा कराना मरणीकी उमों हो पूजा मरणीका नाम व सोना सोना किमो मरणीके सोनाही मरणी किम वा शौर जो मरणी नाम है मरणी वा सोना है सोना मरणी मरणी कसे किम नाम मरणीकी मरणी है मरणीके नाम

नहीं होती है. जो तो तुमको पंमिताईकी चाह हो और सुधे रस्ते जाना होवे तो किसी गीतार्थ सहस्र सेवा करो. जिससें ज्वरूपीजीम कूपसें निकल जाउ
 प्र० ३१ दिनमें शिर ढकके चलना कितना दिन चमेतां ढकना ? २ महिने और ६ ऋतुओंमें कितना कितना काल सो लिखना.

उ० ३१ श्री जगवतीजी सूत्रमें कहा है कि सघले दिनमें उस पम्ती है सो उसकी रक्षाके वास्ते हमारे पूर्वाचार्योंने इसतं हकी मर्यादा बांधी हैकि गरमीमें दोषमी दिन चमे तब तक और सांभको दोषमी दिन रहे जबसें बहार जाना होवे तो शीर ढकके जाना जबतक सूर्योदयको दो घन्टी होवे तबतक, इसी तरेहसें चतुर्मासेमें ६ ठेघमी दिन रहे जबसें लगाके ६ ठेघमी दिन चमे तब तक, और श्यालेमें ४ च्यार घडी दिन रहे. जबसें लगाके च्यार घन्टी दिन चमे तबतक शिर ढकना इस वास्ते हम शिर ढकके चलते हैं परंतु तुम दयाधर्मी कहातेहो और खूले मञ्जेके साथ फिरते हो खबर नहीं कितनेही अप्कायांके जीव मारदेते होंगे सो तो ज्ञानी महाराज जाणो. तथा हम पुठते हैकि तुम रात्रीको शिर ढकके चलतेहो सो किस शास्त्रकं मुजिव जेकर कहोंगेकि उसकी रक्षा करनेको ढकने है तो हम पठते हैकि जगवतीजी सूत्रमें सारा दिन उस पम्ती लिखी है सो मानतेहो के नहीं जो नहीं मानतेहा तोतो हमको पुठनेकी कुठ जरूर नहीं है क्योंकि तुम जगवतीजीका कथन नहीं मानतेहो इम वास्ते जैनमतसें बाहिरहा और जेकर मानतेहो तो

मुनाँ मागेदिन गिर दकके चलना लाडिए इमि वा-
मे ह्य मुनाँ वलने हेकि किम महुम्की सेवा करो
मोँ नान्बर्ग क्या है मो मगाजा.

३५ कपडाइ ककके, जूठ बाँजक. और जगवानकी
मोगंद नुडी याकर मत बधावना कौनमें साखमें है.

३६ एव श्रीश्रवे यास्ते जूठ नदी बाँजना, कपडाइ नदी
जानी, जगवानकी मोगंद नदी यानी वर सर्व शा-
शोच्य मगाजा है.

३७ क्या पाणी कगके लेना और २? इरीन मका-
गीइ मणे पाणी बाँवणके लेने नले है मो नयाँ
मरी लेने हो.

३८ एव जो नयापाणी लेने है मो कगके नही लेने
है और २? इरीन मकाके पाणीके बिनही नया
पाणी लेना लिखा है नया और मी पाणीके लिखे
एव पाणी शुद्ध हमने पाटुम ममने है मो प्रदात क-
रि है परंतु मकानिउम शिम गणीका काल पदोन
जावे मो नही लेने है एरीन मुक लोक जो मकानिउम
जिममें किननेमें नीर उल्लभ होने है नया पाणी मगा
मगाके लिखने हुडे जामे टिनरा मोगम संवेदे और
पिलीने मो मो इरीन न नयाके नही पले है.

३९ २५ एवे श्रीश्रवे जगवान मंगुर मरके कौमोनाकी
इरा पाणी, पाणामेलेके मगाजामे मरी मने मो पाण
मरी २ इरीने मकानिउम नही मरने, मगाजामे मगाजामे
एक हीके लिखने है

४० १० एवे श्रीश्रवे मकानिउम मंगुर मरके कौमोनाकी
मरी २ इरीने मकानिउम नही मरने, मगाजामे मगाजामे
एक हीके लिखने है

.

1

शनमें है कि कमज्यादे.

उ० ४१ दोनोमेंसे जिसके देखनेसे अधिक चित्तोद्वासः
सोइ अधिक है.

प्र० ४२ अपने जगवान जानके तालेमें रखनेसे व
फल होवे.

उ० ४३ प्रतिमाजीकों जगवानकी आकृतिजाएकर रक्षाके
वास्ते ताले लगाने मां जक्ति है और जक्तिता फल
मोक्ष है जसें शासोंकों जगवानकी वाणी जाएके
रक्षाके वास्ते तालेके मंदर रखने.

प्र० ४३ सागीकों जोगी करे तथा जक्ति माने तो क्या फल

उ० ४३ जे सागी है मां किसीका कर्म जोगी नहीं होता
है और जो उसको जक्ति पूजा करे उसको महाफलही

प्र० ४४ एक कर्ममें २४ जोगीम जगवानके जीव एकाके

धामे रत्नवाहुज मितिवन्तात । इम वाग्ने, सुदृष्ट ए-
तोंको श्यावाय रमाना नदी नादिष्ट क्योंकि जैनमतके
धर्मों सुमित गरी वस्तु एत र्चनोम मय्य शोत्रे जीव
मय्यक होयको है और जीव मय्यक मय्य सुदृष्ट ए-
तोंको श्यावाय रमाना नदी है जो गावे उनको वस्तु
इसके रूप को उन मानवालेहो मय्य रत्न वाया र-
के लो एवमे मय्य मानते है. १८

१९ मोक्षरत्ना नाम कधी धर्मशास्त्रिक जिनके जैन
धर्म विद्वान कहते है मोक्षी रत्नक है क्योंकि वमे
इस लो नाम एवमे पारमेधमे एवमि मिमानमे के-
गली नाम सुधम जैन सुधम होतमि है इम वाग्ने
विद्वानको एवमे योग्य नदी है विद्वानेवमः सुधमः
इम वचनान्, जगतो नाम मोक्षे एति वचनान्. १९

२० इवाम् (धर्मात्) यदनी धर्मक है क्योंकि
धर्मके एवमे निष्ठा एवमि वाग्नेवमो इति मोक्षी लो,
२० धाम एवमि जीव जीव नाम न जगतो इति
धर्मो जगतो नाम सुधम नदी एवमि वाग्नेवमो इति
धर्मो जगतो नाम सुधम इति लो धर्मो वाग्ने इति
धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो

२१ धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो
धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो
धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो
धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो
धर्मो जगतो इति लो धर्मो वाग्ने इति धर्मो जगतो

ई मो नाथ यह काम करते नहीं हैं, परंतु
 दिन बनाने तथा मंदिर बनानेवालों
 योगे यह विधीना जंतुशास्त्रमें लिखा नहीं
 धरा तो भेष ही श्वपना शक्ति होने तो
 नारी तो बनवानेवालों अनुभवना को यह
 मृगोदनाका कथन जन्मपत्रका यह लिखा है
 २७ श्री प्रतिमातीरा संस्था को के नहीं
 २८ श्री प्रतिमातीरा संस्था को यह कथन ज्ञाना-
 मुक्त है।
 २९ श्री संस्था को के नहीं जन्म जन्म को के श्री मत्.
 ३० श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 जन्म जन्म जन्म
 ३१ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३२ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३३ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३४ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३५ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३६ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३७ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३८ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ३९ श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म
 ४० श्री संस्था को के श्री जन्म जन्म जन्म जन्म जन्म

- १० ८५ प्रतिमाजी तिन प्रकारकी है श्वेतांवरी, दिगं और बौद्धपतकी इममे मस कौनमी और असस नसी है तीर्थकरोंकी प्रतिमा घरमे रखे के नही किमकी पूजे.
- १० ८५ जैनशास्त्र मृजिव श्वेतांवरी प्रतिमा मस है : घरके मंदिरमें तीर्थकरोंकी प्रतिमाजीकी पूजा करे
- १० ८६ मल्लिजीकी प्रतिमा स्त्रीकी क्यों नही बनाते है
- १० ८६ मल्लिजिनकी प्रतिमा बनाते है जिममें शापमे विमा ननावनी लीपी है उमवरेमे बनाते है
- १० ८७ जो आन्मारामजीके प्रश्न १२ वेदशास्त्रीको गुड वाले जेजेथे सो मस हैकि पमस, सो शास्त्र मस कि पमस जिमके अनुगारे जिमे है पांर सो नवेरोहि नही
- १० ८७ वेदशास्त्री जाने वा आन्मारामजा जान जे तुमहो ऐं ऐं करनेका क्या जरूर है.
- १० ८८ कारणमे जन सोने के नरी या शास्त्रमीम मस पमसने पावे क्या जान विमा
- १० ८९ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९० जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९१ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९२ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९३ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९४ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९५ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९६ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९७ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९८ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस
- १० ९९ जो शास्त्रमे जाने के मतके समीप जाके कि क्या है सो पमस

नदी नदी लिखनी क्योंकि सुख्याल चौपट्टीकी
नदीना देवदो इग नामे सम्पत्तमें नदि लिखनी
आवकोंके नीन मनोन्धका स्वल्प लिखना.

३० ३२ पूजा सम्पत्तकी करणी है और बिना सम्पत्तको
अंगीकार करे वन अंगीकार होते नदी हैग पोंकि नदी
अंगी सम्पत्त पूजा समान है और सुख बिना भाषा
शेक नदी है इग नामे पूजाकी वनोंके गंनगनही
तापनी और श्रावकक विन मनोन्ध वाणांग सु-
धमे देग लेने

३१ ३३ मिश्र जगदानका क्या संग है और मिश्रचरमे
क्या संग है.

३२ ३४ मिश्र जगदानका कोर संग नदी और मिश्रचरमे
ए संग संग है.

३३ ३५ अर्ध द्वायके सिनाम, नीवकी रक्षाके के कीकने
आविके.

३४ ३६ अर्ध जिनकर जगदानकी आक्षामे है. नदी दवा
कोर नदी सिनामे.

३५ ३७ दीर्घकोके आक्षामे क्या सम्पत्त है और अर्ध
कोर संग है.

३६ ३८ अर्धकोके सम्पत्त द्वायके अर्धे को सिनामेदि
कोर सिनामेदिवाका अर्धे नदी को गुमान; अर्धे
को सम्पत्त संग संग है.

३७ ३९ सम्पत्तकोके सम्पत्तको ३० द्वायके सम्पत्तकी
सम्पत्तको अर्धे अर्धे है.

३८ ४० सम्पत्तकोके सम्पत्तको ३० द्वायके सम्पत्तकी
सम्पत्तको अर्धे अर्धे है.

३९ ४१ सम्पत्तकोके सम्पत्तको ३० द्वायके सम्पत्तकी
सम्पत्तको अर्धे अर्धे है.

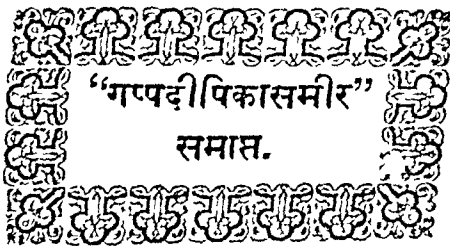
- १५ सुत्तागमे १ अज्ञागमे २ तड्जयागमे ३ इनमे अगम किसकी कहना और उनका स्वरूप लिखना.
- १६ दीक्षा देनेकी विधि किसतरहे है कौनसा पाठ पस्त दीक्षा देतेहो और वे पाठ कौनसे शास्त्रमे है.
- १७ सम्यक्त तथा श्रावकोंके व्रत देनेकी क्या विधि और किस शास्त्रानुसार है.
- १८ श्री अनुयोगद्वार मुत्रमे तीन प्रकारकी निर्युक्ति कह है "निक्षेपनिर्युक्ति १ उपोद्घातनिर्युक्ति २ श्री मुत्रस्पर्शक निर्युक्ति ३" इन तीनोंका क्या स्वरूप और मुत्रागम हैकि अर्थागम है.
- १९ यह तीनोंही निर्युक्ति एक शास्त्रके वास्ते हैकि ग शास्त्रोंके वास्ते है.
- २० जगवतीजी मुत्रमें तथा नंदीजी विंगरे पण्डे शास्त्रमें अनुयोगकी विधि लिखी है ॥ यतः ॥
 मुत्तजो गलुगढमो, नीचनिर्युक्ति मीगच जणीच ।
 नरुच निरविगेमो, एमविहो हार अणुचमो ॥१॥
 एम गाथाका तात्पर्यार्थ यह हैकि मुत्र और मुत्रागम अर्थ यह प्रथम कहना, उर्जीवाम निर्युक्ति निर्विषय क हना और तीमगीदपे, निर्विषय कहना एम विविध अनुयोग होना है. एम गाथामे जो निर्युक्ति और निर्विषय कहा है सो कौनसे आगममें है वा अज्ञागम स्वरूप है.
- २१ निर्युक्ति और निर्विषय यह दोनाका कर्ता कहेते और यह दोनोंही कर्ता है.
- २२ लोकात् ३१ मुत्र वासे है और नाहीकानर ३१ म कौनसे मुत्रमे और २२ इनाना ३३ ३४ ३५

१. ११ त्रैलोक्ये ज्ञानं नया व्यवहारः स मूत्र जो लोकने
 २. १२ ज्ञानं नया नुमने ११ टोलिवात्तान कानमे प-
 ३. १३ ज्ञानं नया है नया इन दोनोंमें मजा कौन
 ४. १४ ज्ञानं नया है तो सर्व मयाण सहित ज्ञानना.
 ५. १५ ज्ञानं नया मायुलीनं वोगरायकर ११ टोलिवात्तान
 ६. १६ ज्ञानं नया निक्षय करा है.
 ७. १७ ज्ञानं नया अर्थ किण पामां धारण करेये और
 ८. १८ ज्ञानं नया, मुनार्थ, नियुक्ति तथा निर्दि-
 ९. १९ ज्ञानं नया.

१०. २० ज्ञानं नया के पुस्तकमें लिखी हुई है ज-
 ११. २१ ज्ञानं नया किमर्थों के सो जा-
 १२. २२ ज्ञानं नया.
 १३. २३ ज्ञानं नया १ ज्ञानों का मतान्ते नाम
 १४. २४ ज्ञानं नया नारायण ज्ञाने है.
 १५. २५ ज्ञानं नया भाग ११ ज्ञानं नया
 १६. २६ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया, धारण
 १७. २७ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 १८. २८ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 १९. २९ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २०. ३० ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २१. ३१ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २२. ३२ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २३. ३३ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २४. ३४ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २५. ३५ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २६. ३६ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २७. ३७ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २८. ३८ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 २९. ३९ ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया
 ३०. ४० ज्ञानं नया ११ ज्ञानं नया

मन्त्रों से मन में नसी जाती बात क्योंकि मूर्खोंद्वय होता है
 वह मने तोड़ने प्राणों में होता है परन्तु बुद्धि प्राणों में
 होती है ऐसे जो तो जग्य प्राणी है और जिमकों मया
 मने निर्णय करने की चाह है उन प्राणीयाकों तो यह
 मन्त्र मानकर मालूम होजायगाकि यह सत्य है और यह
 जग्य है और जिमकों चाह नहीं है उनोंके वास्ते हम
 कुञ्जी जिन नहीं गक्ते है. इत्यलम् विस्तरेण संवत्
 १९॥७ प्रथम चाउमारे कृशपदे त्रयोदश्यां तिथौ
 बुधवासरे ॥

श्याचार्याष्टविक्रमहस्तश्रियायुक्ता श्रीमद्विजया-
 नंदगुरीश्वरस्यापरनाम्ना श्रीमदात्माराममहामु
 नेर्जगृशिष्यः श्रीमल्लक्ष्मीविजयः तन्निष्यः
 श्रीमध्वर्षविजयः तल्लयुशिष्येनवल्लजा
 रुयमुनिनाकृताः गप्पदीपिकासमीर
 नाम्नाग्रंथः ॥





.....
.....
.....

